॥ ॐ श्रीगौतमाय नमः ॥
॥ अथ श्रीजीवविचार प्रकरण प्रारंभः ॥

प्रथम ग्रंथकर्त्ता श्रीशांति सूरि आद्यमां मंगलाचरण करतां प्रयोजनादिकनुं सूचन करे छेः—

॥ आर्यावृत्तं ॥

भुवण पईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ॥ जीवसरूवं किंचिवि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥

गाथा १ लीना छूटा शब्दना अर्थ.

भुवण=भुवन (त्रण).	बोहत्थं=बोध थवाने अर्थे.
पईवं=प्रदीप (समान).	जीवसरूवं=जीवनुं स्वरूप.
वीरं=महावीरस्वामीने.	किंचिवि=लेशमात्र.
नमिऊण=नमस्कार करीने.	जह=जेम, जेवी रीते.
भणामि=कहुं छुं.	भणियं=कह्युं छे.
अबुह=(तत्त्वविचारने विषे) अज्ञानी.	पुव्व=पूर्वना.
	सूरीहिं=सूरिओए.

अर्थः—(भुवण के०) त्रण भुवन, एटले चतुर्दश रज्ज्वात्मक जे लोक, तेने विषे (पईवं के०) प्रदीप

समान अने सकल पापने दूर करनारा एवा (वीरं के०) श्रीमहावीरस्वामीने (नमिऊण के०) नमस्कार करीने (जह के०) जेम (पुव्वसूरीहिं के०) सुधर्मस्वाम्यादिक पूर्वसूरिउए (जणियं के०) पोतानां आगममां प्रगट कर्युं छे तेम हुं पण (अबुहबोहत्थं के०) तत्त्वविचारने विषे अज्ञानी जीवोने बोध थवाने अर्थे (किंचिवि के०) लेशमात्र (जीवसरूवं के०) जीवनुं स्वरूप (जणामि के०) कहुं छुं ॥ १ ॥

हवे जीवना भेद कही बतावे छेः—

जीवा मुत्ता संसा,–रिणो अ तस थाव-
रा अ संसारी ॥ पुढवि जल जलण
वाऊ, वणस्सई थावरा नेआ ॥ २ ॥

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

जीवा=जीव.
मुत्ता=मुक्ति पामेला, मुक्त.
संसारिणो=संसारी जीवो.
अ=तथा.
तस=त्रस (हाले चाले ते).
थावरा=स्थावर (स्थिर रहे ते).
संसारी=संसारी.

पुढवि=पृथ्वीकाय.
जल=अप्काय.
जलण=तेउकाय.
वाऊ=वायुकाय.
वणस्सई=वनस्पतिकाय.
नेआ=जाणवा.

अर्थः—(जीवा के०) जीव ते एक मुक्तिना तथा बीजा संसारी, ए बे प्रकारना छे. तेउमांना (मुत्ता के०) जेउ सकल कर्मरूप पटलोनो क्षय करीने मुक्तिपदने पाम्या छे तेउ सिद्ध जीवो कहेवाय छे; (अ के०) तथा (संसारिणो के०) जेमां संसृतिने पमाय छे ते संसार कहेवाय छे, एवा संसारनी नरकादि चार गतिउमां जेउ भ्रमण करे छे तेउ संसारी जीवो कहेवाय छे. ते (संसारी के०) संसारी जीवना एक (तस के०) त्रस (अ के०) वली बीजा (थावरा के०) स्थावर, ए बे प्रकार छे; तेउमांना स्थावर जीवोना पांच प्रकार छे ते आ प्रमाणेः— एक (पुढवि के०) पृथ्वीकाय, बीजा (जल के०) पाणी ते अप्काय, त्रीजा (जलण के०) ज्वलन ते अग्निकाय, चोथा (वाऊ के०) वायुकाय, पांचमा (वणस्सई के०) वनस्पतिकाय, एवी रीते ए (थावरा के०) स्थावर जीवो पांच प्रकारना (नेआ के०)जाणवा ॥२॥

हवे ए स्थावर जीवोना भेदमां अनुक्रमे प्राप्त थयेला पृथ्वीकाय जीवोना भेद कहे छेः—

फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल हरि-

याल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ
धाउ सेढी, वन्नि अ अरणेट्टय पलेवा
॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पा-
हाण जाइओ णेगा ॥ सोवीरंजण लू-
णा,-इ पुढविभेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

गाथा ३ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

फलिह=स्फटिक रत्न.
मणि=चंद्रकांतादिक मणि.
रयण=रत्न.
विद्रुम=परवालां.
हिंगुल=हिंगलो.
हरियाल=हरुताल.
मणसिल=मणसिल.
रसिंदा=पारो.
कणगाइ=कनकादि (सोनुं विगेरे).
धाउ=धातु.
सेढी=खडी माटी, चाक.
वन्नि=लाल रंगनी माटी, हरमजी.
अरणेट्टय=पाषाणना कटकानी साथे मळेली धोळी माटी.
पलेवा=एक जातिनो पाषाण.

गाथा ४ थीना छूटा शब्दना अर्थ.

अब्भय=अबरख (पांच वर्णनो).
तूरी=एक जातिनी माटी.
ऊसं=खारो.
मट्टी=माटी.
पाहाण=पाषाण, पत्थर.
जाइओ=जातिओ.
णेगा=अनेक.
सोवीरंजण=सुरमो.
लूणाइ=सिंधव विगेरे.
पुढवि=पृथ्वीकाय.
भेआइ=भेदो.
इच्चाई=इत्यादि.

अर्थः–(फलिह के०) स्फटिक प्रसिद्ध छे, (मणि के०) मणि ते चंद्रकांतादिक अथवा जे समुद्रमां उत्पन्न थाय छे ते, तथा (रयण के०) रत्न ते वज्र कर्केतनादिक अथवा जे खाणमां उत्पन्न थाय छे ते, (विद्रुम के०) परवालां अथवा विद्रुम, (हिंगुल के०) हिंगलो, (हरियाल के०) हरताल, (मणसिल के०) मणसिल, (रसिंदा के०) पारो अथवा रसेंद्र, (कणगाइ धाउ के०) कनकादि धातु सात छेः–सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, कथीर, जसत, सीसुं तथा लोढुं; ए अग्निसंयोगना अभावे पृथ्वीकाय छे अने अग्निसंयोगे तेउकाय छे, (सेढी के०) खरी माटी अथवा चाक कहेवाय छे ते, (वन्नि के०) हरमजी अथवा लाल रंगनी माटी थाय छे ते, (अरणेट्टय के०) पाषाणना कटकानी साथे मलेली धोली माटी थाय छे ते तथा (पलेवा के०) ए एक जातिनो पाषाण छे ॥ ३ ॥ (अब्भय के०) पांच वर्णनो अबरख, ते सोनी लोकोने सोनुं तपाववाना उपयोगमां आवे छे अथवा वैद्य लोको एनी भस्म विगेरे करीने ओषधिमां वापरवाने कामे लगाडे छे, (तूरी के०) एक जातिनी माटी छे, ते कापडने पाश देवाना कामसां

आवे छे, (ऊसं के०) ए पण एक जातिनी माटीज छे, पण क्षार भूमिमां उत्पन्न थवाथी क्षार अथवा खारो ए नामे ओलखाय छे. एवी रीते (मट्टी के०) माटी अने (पाहाण के०) पाषाण, ए बे पदार्थोनी काली, नीली, राती, पीली अने धोली एवी (जाइ-उ णेगा के०) अनेक जातिउ छे ते वधी लेवी तथा (सोवीरंजण के०) ए सुरमो एवे नामे ओलखाय छे ते आंखमां अंजाय छे. (लूणाइ के०) सिंधव, साजी, बिरूलवण, काचलवण तथा समुद्रलवण, (इच्चाई के०) इत्यादि, (पुढविभेआइ के०) पृथिवी-काय संसारी जीवोना भेद कहेवाय छे ॥ ४ ॥

हवे बादर अप्काय जीवोनुं वर्णन करे छेः—

भोमंतरिक्खमुदगं, ओसा हिम करग
हरितणू महिआ ॥ हुंति घणोदहि-
माई, भेआ णेगा य आउस्स ॥ ५ ॥

गाथा ५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

भोमं=भूमिनुं.
अंतरिक्खं=आकाशनुं.
उदगं=पाणी.
ओसा=ओसनुं पाणी, ऊाकल.
हिम=हिम, बरफ.
करग=करा.
हरितणू=घास प्रमुख लीली व-नस्पतिना अग्र भाग उपरनां पाणीनां बिंदु.

महिआ=वरसादनी फरफर, धुमरीनुं पाणी.
हुंति=थाय छे.
घणोदहिमाई=घनोदधि आदि.
भेआ=भेदो.
णेगा=अनेक.
आउस्स=अप्कायना.

अर्थः—(भोमं के०) कूपादिनुं पृथ्वीमां रहेलुं तथा शिरोपानीय, ए वधुं भूमिजल कहेवाय छे, (अंतरिक्खमुदगं के०) सरोवरादिकने विषे जे मेघनुं पाणी भराय छे ते अंतरिक्ष उदक कहेवाय छे, (उसा के०) उसनुं पाणी ए तुषार अथवा झाकल पण कहेवाय छे, (हिम के०) हिम पड्याथी जे बंधाइ जाय छे ते पाणी, (करग के०) वर्षाऋतुमां मेघ पडतां वायुना योगे पाणी बंधाइ कठिन थइने धोला पाषाणना कटका जेवा पृथ्वी उपर पडे छे ते करा अथवा करक कहेवाय छे, (हरितणू के०) उगेला घास प्रमुख वनस्पतिना मोर अथवा झाड प्रमुखनां पांदडांने छेडे जे पाणीनां बिंदु थाय छे ते हरितनु कहेवाय छे, (महिआ के०) आकाशने विषे कोइ समये वादलां थइ आवे छे तेना योगे अति सूक्ष्म झीणी झीणी पाणीनी बूंदो पडे छे ते महिका अथवा धुमरीनुं पाणी कहेवाय छे, एवी रीते (आउस्स

के०) अप्कायना (घणोदहिमाई के०) जेने आधारे पृथ्वी रही छे ते घणोदधि आदि दइने बीजा पण (भेआ घेगा के०) अनेक भेदो (हुंति के०) थाय छे. ए अप्काय जीवोना भेद कह्या ॥ ५ ॥

हवे तेउकाय जीवोना भेद कहे छेः—

इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कण-
ग विज्जुमाईआ ॥ अगणिजिआणं
भेआ, नायव्वा निउणबुद्धिए ॥ ६ ॥

गाथा ६ ठीना छूटा शब्दना अर्थ.

इंगाल=अंगारानो अग्नि.	विज्जु=विजली.
जाल=ज्वालानो अग्नि.	आईआ=आदि.
मुम्मुर=भ्रासडि, भाठो.	अगणि=अग्निकाय.
उक्का=उल्कापातनो अग्नि.	जिआणं=जीवोना.
असणि=वज्रनो मार मारतां पडतो अग्नि.	भेआ=भेदो.
	नायव्वा=जाणवा योग्य.
कणग=कणीआनो अग्नि.	निउण=निपुण, सूक्ष्म.

अर्थः—(इंगाल के०) ज्वाला विनानो अग्नि, काष्ठ प्रमुख वस्तुनुं सत्व ज्यारे बली जाय छे त्यारे अग्निनी ज्वालानो नाश थइ जाय छे, अने रक्त रत्ननी पेठे चलकित ककडा थइ रहे छे ते अंगार कहेवाय

छे, (जाल के०) ज्वालानो अग्नि, (मुम्मुर के०) अग्निनी ज्वालामांथी जे सूक्ष्म कण नीकले ते भ्रासङ्कि अथवा भाठो कहेवाय छे, (उक्का के०) कोइक कालने विषे आकाशमांथी अग्निनी वृष्टि थाय छे ते उल्कापातनो अग्नि कहेवाय छे, (असणि के०) वज्रनो मार मारतां तेमांथी अग्नि पडे छे ते अशनि कहेवाय छे, (कणग के०) कोइक कालने विषे आकाशमां अग्निना तणखा उडता देखाय छे ते कनक एटले कणीआनो अग्नि कहेवाय छे, (विज्जु-माईआ के०) विजली आदिक ते वर्षाऋतु प्रमुख कोइ पण ऋतुमां ज्यारे मावठुं थाय छे त्यारे कोइ वखते आकाशथी विजली पृथिवी उपर पडे छे ते विद्युत्पात कहेवाय छे, इत्यादि (अगणिजिआणं के०) अग्निकाय संसारी जीवोना (भेआ के०) भेदो ते (निउणबुद्धिए के०) निपुण एटले सूक्ष्म बुद्धिए करी (नायव्वा के०) जाणवा योग्य छे ॥ ६ ॥

हवे वायुकाय जीवोना भेद कहे छेः—

उब्भामग उक्कलिआ, मंडली मह सुद्ध

गुंजवाया य ॥ घणतणुवायाईया,
नेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

गाथा ७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उब्भामग=उद्‌भ्रामक एटले उंचे भमावे तेवो वायु.
उक्कलिआ=उत्कलिक एटले नीचो पडतो वायु.
मंडली=वंटोळीउं, मंडलिक.
मह=महावायु
सुद्ध=शुद्धवायु.
गुंजवाया=गुंजारव करतो वायु.
घणतणुवाया=घनवायु अने तनुवायु.
आईया=आदिक.
नेया=भेदो.
खलु=निश्चे.
वाउकायस्स=वाउकायना.

अर्थः—(उब्भामग के०) उंचो आकाशने विषे जे वायु तृणादिकना छेडाने भमावे छे ते उद्भ्रामक वायरो कहेवाय, (उक्कलिआ के०) जे वायु नीचो पडतो होय ते उत्कलिक वायु कहेवाय छे, (मंडली के०) वंटोळीउं अथवा मंडलिक वायु कहेवाय छे, (मह के०) कोइ वार मोटो वायरो थाय ते महावायु, (सुद्ध के०)जे शनैः शनैः वाय ते शुद्धवायु, (गुंजवाया य के०) जे गुंजारव करे ते गुंजवायु कहेवाय छे, अने (घणतणुवाया के०) जे वे वायुने आधारे नरक देवलोकादि रहेलां छे ते एक घनवायु तथा वीजो तनुवायु कहेवाय

छे, (आईया के०) इत्यादिक (खलु के०) निश्चे करी (वाउकायस्स के०) वायुकाय संसारी जीवोना (भेया के०) भेदो जाणवा. ए प्रमाणे ७ गाथाए करी पृथिवी, अप्, तेज तथा वायुकायना भेद कह्या ॥ ७ ॥

हवे वनस्पतिकायना भेद कहे छेः—

साहारण पत्तेआ, वणस्सइ जीवा
दुहा सुए भणिआ ॥ जेसिमणंताणं
तणु, एगा साहारणा तेउ ॥ ८ ॥

गाथा ८ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

साहारण=साधारण.	जेसिं=जेमनुं.
पत्तेआ=प्रत्येक.	अणंताणं=अनंत जीवोनुं.
वणस्सइ=वनस्पतिकाय.	तणु=शरीर.
जीवा=जीवो.	एगा=एक.
दुहा=बे प्रकारना.	साहारणा=साधारण.
सुए=सिद्धांतने विषे.	तेउ=तेने.
भणिआ=कहेला छे.	

अर्थः—(वणस्सइ जीवा के०) वनस्पतिकाय जीवो ते एक (साहारण के०) साधारण अने बीजा (पत्तेआ के०) प्रत्येक, ए (दुहा के०) बे प्रकारना (सुए के०) सिद्धांतने विषे (भणिआ के०) कहेला छे.

तेउंमां (जेसिमणंताणं के०) जे अनंत जीवोनुं (तणु एगा के०) एक शरीर होय (तेऊ के०) तेने (साहारणा के०) साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा ॥ ८ ॥

हवे बे गाथाए करी ए साधारण वनस्पतिकाय जीवोना भेद कहे छेः—

कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल
भूमिफोडा अ ॥ अल्लयतिय गज्जर
मो,—थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥
कोमल फलं च सवं, गूढसिराइ सिणा-
इ पत्ताइं ॥ थोहरि कुंआरि गुग्गुलि,
गलोयपमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥

गाथा ए मीना छूटा शब्दना अर्थ.

कंदा=कंद.
अंकुर=अंकुर, फणगा.
किसलय=कुंपलो.
पणगा=पांच वर्णनी फुगी.
सेवाल=सेवाल, लील.
भूमिफोडा=बिलाडीना टोप.
अल्लयतिय=आर्द्रकत्रिक (लीलुं आदु, लीली हलदर अने लीलो कचूरो).
गज्जर=गाजर.
मोथ=मोथ.
वत्थुला=ए नामे शाक विशेष.
थेग=थासुरा, थेगी.
पल्लंका=ए नामे शाक विशेष

गाथा १० मीना बूटा शब्दना अर्थ.

कोमल=कोमल, जेमां बीज न थयां होय ते.
फलं=फल.
सव्वं=सर्व.
गूढ=गानी.
सिराइ=कणसला आदि.
सिणाइ=शणादि.
पत्ताइं=पांदडां.
थोहरि=सर्व जातनो थोर.
कुंआरि=कुंवार.
गुग्गुलि=गुगल.
गलोय=गलो, गडु.
पमुहा=प्रमुख.
आइ=आदि.
छिन्नरुहा=छेद्यां थकां वाव्याथी फरी उगे ते.

अर्थः–(कंदा के०) सूरणादि सर्व जातनां कंद, (अंकुर के०) बहार नीकलेला अंकुर, (किसलय के०) सर्वे जातिनां कुंपलना नवा टसा फूटे ते पातरां जाणवां. (पणगा के०) पांच वर्णनी फुगी, (सेवाल के०) जे पाणीनी उपर रंग रंगनी लील थाय छे ते, (भूमिफोडा के०) वर्षाकालमां छत्रने आकारे पृथ्वीमांथी नीकले छे ते. ते बिलाडीना टोप एवे नामे ओलखाय छे. (अ के०) वली (अल्लयतिय के०) आर्द्रकत्रिक एटले लीलुं आदु, लीली हलदर तथा लीलो कचूरो, (गज्जर के०) गाजर, (मोछ के०) मोथ, (वत्थुला के०) वथुलो नामे शाक विशेष, (थेग के०) थासुरा, थेगी, (पल्लंका के०) ए नामनुं शाक विशेष छे,

एने लोको पालखुं कहे छे ॥ ए ॥ (च के०) वली (कोमलफलं सव्वं के०) सर्व कोमल फल एटले जेमां बीज थयां न होय अने (गूढसिराइ के०) जेनो कण-सलो अथवा पोंख छानो होय, एटले जेना कण पाथरा देखाता न होय, तथा जेनी नसो अथवा सांध स्पष्ट देखाती न होय त्यांसुधी ते अनंतकाय जाणवां, ते (सिणाइ पत्ताइं के०) शणादिकनां पातरां आदि शब्दे करी जारनां पातरां पण लेवां.(थोहरि के०)थोहरनी सर्व जाति,एमां कांटालो तथा खुरसाणी पण जाणवो. (कुंआरि के०) कुंवार थाय छे ते लोकमां प्रसिद्ध छे,एने घरमां ऊंची टांगी होय तोपण सूकाती नथी, किंतु एना नवा मोर नीकलता जाय छे. (गुग्गुलि के०) गुगल प्रसिद्ध छे. (गलोयपमुहा के०) वली गळुची प्रमुख एने गळु पण कहे छे, ए वल्लीने आकारे थाय छे, ए ज्वरादिक मटाडवानी औषधि विशेष छे. (आइ के०)ए आदे दइने बीजां पण सर्वे जे (छिन्नरुहा के०) छेद्यां थकां पण वाव्याथी फरीने ऊगे ते सर्वे साधा-रण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहीए ॥ १० ॥

इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंत-

कायाणं ॥ तेसिं परिजाणणढं, लरकण-
मेयं सुए नणियं ॥ ११ ॥

गाथा ११ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

इच्चाइणो=इत्यादिक.	परि=सारी रीते, समस्त प्रकारे.
अणेगे=अनेक.	जाणणढं=जाणवाने अर्थे.
हवंति=होय छे.	लरकणं=लक्षण.
नेया=नेदो.	एयं=आ.
आणंतकायाणं=अनंतकायना.	सुए=सूत्रने विषे.
तेसिं=तेमने.	नणियं=कहेलुं छे.

अर्थः—(इच्चाइणो के०) इत्यादिक (अणंतका-याणं के०)अनंतकाय जीवोना पिंरु, कचूर तथा गि-रिकर्णिकादिक (अणेगे के०) अनेक (नेया के०) नेदो (हवंति के०) होय छे, (तेसिं के०) ते अनं-तकाय जीवोने (परिजाणणढं के०) सारी रीते जाण-वाने अर्थे (एयं के०) आ वक्ष्यमाण एटले जे आगल कहेशे ते (लरकणं के०) लक्षण (सुए के०) सूत्रने विषे (नणियं के०) कहेलुं छे ॥ ११ ॥ हवे अनंतकाय वनस्पतिजीवोनुं लक्षण कही बतावे छे.

गूढ सिर संधि पव्वं, समनंगमहीं-

रुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं,
तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

गाथा १२ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

गूढ=छानां.	अहीरुगं=तांतणा विनानुं.
सिर=कणसलां.	छिन्नरुहं=छेदीने वाव्याथी फरीने उगे ते.
संधि=सांधा.	
पव्वं=गांठा.	तव्विवरीअं=ते थकी विपरीत लक्षणवाली.
समभंगं=भांग्याथी जेनां सरखां बे फाडीयां थइ शकतां होय.	पत्तेयं=प्रत्येक वनस्पतिकाय.

अर्थः—(सिर के०) कणसलां प्रमुख शिर, (संधि के०) सांधाउं अथवा नसो, (पव्वं के०) पर्व अथवा गांठा; ए त्रणे जे झाडनां (गूढ के०) गुप्त छानां होय एटले दीठामां न आवतां होय अने (समभंगं के०) भांग्याथी जेनां सरखां बे फाडीयां थइ शकतां होय, (अहीरुगं के०)तंतु रहित जेमां तांतणा होय नहीं, (च के०) पुनः एटले वली (छिन्नरुहं के०) जे छेदीने फरी वावीए तो उगे, ए सर्व प्रकारनां वृक्षोने (साहारणं सरीरं के०) साधारण वनस्पतिकायनां शरीर कहीए, अने एज अनंतकाय पण कहेवाय छे. (तव्विवरीअं

के०) ते थकी विपरीत लक्षणवाली वनस्पतिने (पत्तेयं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए ॥ १२ ॥

एग सरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते
य पत्तेया ॥ फल फूल छल्लि कठ्ठा,
मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

गाथा १३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एग=एक.
सरीरे=शरीरने विषे.
एगो=एक.
जीवो=जीव.
जेसिं=जे (वनस्पति)ने.
तु=ज.
ते=तेने.
पत्तेया=प्रत्येक (वनस्पतिकाय.)
फल=फल.
फूल=फूल.
छल्लि=छाल.
कठ्ठा=काष्ठ, लाकडुं.
मूलग=मूल.
पत्ताणि=पांदडां.
बीयाणि=बीज.

अर्थः—(एग सरीरे के०) एक शरीरने विषे (एगो जीवो के०) एक जीव (जेसिं के०) जे वनस्पतिने विषे होय (तु ते य पत्तेया के०)तेनेज प्रत्येक वनस्पति-काय कहीए. ए प्रत्येक वनस्पतिकायना सात प्रकार छे ते आ प्रमाणेः—(फल के०) सर्व प्रकारनां फल, (फूल के०) सर्व प्रकारनां फूलो, (छल्लि के०) उप-

रनी त्वचा अथवा गाल, (कट्ठा के०) सर्व प्रकारनुं काष्ठ अथवा लाकडुं, (मूलग के०) छुंइ तलीयानुं थरु, (पत्ताणि के०) सर्व जातिनां पांदडां, (बीयाणि के०) सर्व बीज; ए साते स्थानक प्रत्येक भिन्न भिन्न जीवरूप होवाथी एउने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए. एवी रीते ए बादर पृथिव्यादिक पांचे थावरना भेद विवरीने कह्या ॥ १३ ॥

हवे पांच स्थावर सूक्ष्मनुं वर्णन करे छेः—

पत्तेयं तरु मुत्तं, पंचवि पुढवाइणो
सयल लोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा,
अंतमुहुत्ताउ अदिस्सा ॥ १४ ॥

गाथा १४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

पत्तेयं तरु=प्रत्येक वनस्पति-काय.	सुहुमा=सूक्ष्म.
मुत्तं=मूकीने.	हवंति=होय छे.
पंचवि=पांचे.	नियमा=निश्चये करी.
पुढवाइणो=पृथिव्यादिक.	अंतमुहुत्त=अंतर्मुहूर्त्त.
सयल=संकल.	आउ=आयुष्य.
लोए=(चौद राज) लोकने विषे.	अदिस्सा=अदृश्य(चर्मदृष्टिए देखाय नहीं तेवा.)

अर्थः—(पत्तेयं तरु मुत्तं के०) ए पूर्वोक्त प्रत्येक वन-

स्पतिकाय मूकीने (पंचवि पुढवाइणो के०) पांचे पृथि-
व्यादिक (सयल लोए के०) सकल चौद राजलोकने
विषे (सुहुमा के०) सूक्ष्म (हवंति के०) होय छे, (नियमा
के०) निश्चये करी. एने पांच स्थावर कहीए. ते (अंतमु-
हुत्ताउ के०) अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाला होय छे
ने (अदिस्सा के०) अदृश्य होय छे, एटले चर्मदृष्टिए
देखाय नहीं. तेथीज ए सूक्ष्म कहेवाय छे ॥ १४ ॥

ए पांच स्थावर सूक्ष्म अने पांच बादर मलीने दश
भेद थया, अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ते बादरज होय
छे, पण सूक्ष्म होय नहीं. तेथी प्रत्येक वनस्पतिकायनो
एक जूदोज भेद होवाथी सर्व अगीयार भेद थाय छे.
ते अगीयार पर्याप्ता तथा अगीयार अपर्याप्ता मलीने
बावीश भेद स्थावर संसारी जीवना कह्या छे अने
बीजा संसारी त्रस कहेवाय छे, तेना मूल चार भेद छे ते
आः—बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय तथा पंचेंद्रिय.
तेउमांना प्रथम बेइंद्रिय त्रस जीवना भेद कहे छेः—

संख कवड्डय गंडुल, जलोय चंदणग
अलस लहगाई ॥ मेहरि किमि पूअ-
रगा, बेइंदिय माइवाहाई ॥ १५ ॥

गाथा १५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संख=शंख.	अलस=अलसीयां.
कवड्डय=कोडीउं.	लहगाई=लालीया जीव.
गंडुल=गंडोला.	मेहरि=मेर (लाकडामां थता).
जलोय=जलो.	किमि=कृमि.
चंदणग=चंदनक, अरिया, अक्ष.	पूअरगा=पूरा.
	माइवाहाई=चूडेल आदि.

अर्थः-(संख के०) दक्षिणावर्त्त प्रमुख मोटा तथा नाना शंख होय छे ते, (कवड्डय के०) कपर्दक अथवा कोडीउं अने कोडा थाय छे ते, (गंडुल के०) गंडोला एने गगुता कहे छे, ए उदरमां मोटा कृमियां उत्पन्न थाय छे ते जाणवां, (जलोय के०) जलो ए शरीरनी उपर फोडा वगेरे आव्या होय त्यारे तेनी उपर मूक्याथी ते जग्यानुं रक्त शोषण करी लीए छे ते, (चंदणग के०) एने सिद्धांतोमां अक्ष एवा नामथी प्रतिपादन कर्युं छे, एने अरिया पण कहे छे, ते साधु स्थापनामां राखे छे. (अलस के०) वर्षाकालमां वृष्टि थाय छे ते वखते पृथिवीमांथी सर्पना आकारे लाल रंगवाला जे अति पातला जीवो उत्पन्न थाय छे, ते ज्यांसुधी वरसाद थतो होय त्यांसुधी ज्यां त्यां घणा

फरता दीवामां आवे छे, ज्यारे वरसाद रही जाय छे ने तडको पडे छे त्यारे तेउंसांनो एक पण दीवामां आवतो नथी. एने भूनाग अथवा अलसीयां पण कहे छे. (लहगाई के०) रोटली प्रमुख पकावेलुं अन्न वासी रही गयाथी केटलाएक काले तेमां जे जीव पडे छे तेने लालीया कहे छे, (मेहरि के०) काष्ठमां जे कीडा थाय छे ते, (किमि के०) ए पण एक जातना कीडा होय छे ते उदरमां उत्पन्न थाय छे, अथवा गुदप्रदेशने विषे हरस थाय छे तथा गुंबडां वगेरेना क्षतने विषे जे कीडा थाय छे तेने कृमि कहे छे. (पूअ-रगा के०) ए जीव पाणीमां उत्पन्न थाय छे, ए जीवोनो वर्ण रातो होय छे अने मुख कालुं होय छे. एने कछी भाषामां पूरा कहे छे; अने (माइवाहाई के०) मातृवाहादिक एने चूडेल पण कहे छे, मूल गाथामां आदि शब्द छे ते आदि शब्दथी मनुष्यना अंगमां जे वाला थाय छे ते पण लेवा, इत्यादिक (बेइंदिय के०) बेइंद्रिय जीव जाणी लेवा. ए जलमां तथा स्थलमां उत्पन्न थाय छे. ते अनेक प्रकारना छे. एउने स्पर्शेनें-द्रिय तथा रसनेंद्रिय ए बे इंद्रियो होय छे ॥ १५ ॥

हवे बे गाथा वडे तेइन्द्रिय जीवना भेद कहे छे;—

गोमी मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय गोकीडजाईउ॥ १६॥ गद्दहय चोरकीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य॥ कुंथु गुवालिय इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई॥ १७॥

गाथा १६ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गोमी=कानखजूरा.
मंकण=मांकड.
जूआ=यूका.
पिपीलि=कीडी.
उद्देहिया=उद्देहिका, उधेइ.
मक्कोडा=मंकोडा.
इल्लिय=इल.
घयमिल्लीउ=घीमेल.
सावय=सावा.
गोकीड=गींगोडा.
जाईउ=जातिओ.

गाथा १७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गद्दहय=उत्तिंगा, गधैया.
चोरकीडा=विष्टाना कीडा.
गोमयकीडा=छाणना कीडा.
धन्नकीडा=धान्यना कीडा.
य=वली.
कुंथु=कुंथुआ.
गुवालिय=गोपालिक.
इलिया=इलिका.
तेइंदिय=तेइन्द्रिय.
इंदगोवाई=इन्द्रगोपादि.

अर्थः—(गोमी के०) कानखजूरीआ, एना पग

घणा होय छे, ने ए कालमां पेसी जइने माणसने घणी इजा करे छे, एम कहेवाय छे, (मंकण के०) माणसना सुवाना विछानामां अथवा खाटला प्रमुखनी नवारमां जे जीवो उत्पन्न थाय छे तेने मांकड कहे छे, (जूआ के०) यूका, ए जीवो माणसना माथाना वालमां उत्पन्न थाय छे, अथवा माणसनां कपडांमां उत्पन्न थाय छे, एटले ए माणसना शरीरना मेलमांथी उत्पन्न थाय छे, एने कछी तथा गुजराती भाषामां लीख कहे छे, ते संस्कृत लिक्ष शब्दनो अपभ्रंश छे. (पिपीलि के०) एने पिपीलिका अथवा कीडी कहे छे, एनी राती अने काली एवी घणी जाति होय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (उद्देहिया के०) उद्देहिका, एने वाल्मिक जीव पण कहे छे. ए जीवो वृक्षमां, काष्ठमां अथवा गृहमां ज्यां ज्यां प्रवेश करे छे त्यां त्यां पोतानुं शरीर रहेवा पूरतुं घर बनावीने तेमांथी ते वृक्षादिकने खाती खाती चाली जाय छे. (य के०) वली (मक्कोडा के०) मत्कोटिका अथवा मंकोडा, ए जीव घणुं करीने बावलना झाडना थडमां उत्पन्न थाय छे, अथवा गोल प्रमुख मिष्ट पदार्थ ज्यां होय त्यां थाय छे. (इल्लिय के०) इलिका, ए जीव

धान्यादिकमां उत्पन्न थाय ठे, एने इल पण कहे ठे. (घय-सिव्वीउ के०) ए जीव घृतमां उत्पन्न थाय ठे, एने घी-मेल पण कहे ठे. (सावय के०) सावा, ए जीव मनुष्यना शरीरना माथा सिवाय बीजां सर्व अवयवमांना के-शोना थम्मां उत्पन्न थाय ठे. तेमां पण विशेषे करी आंखनी पांपणमां थाय ठे. ते जे वखते मनुष्यना शरी-रमां उत्पन्न थाय ठे ते वखते जविष्यकाल विषे एवुं अनुमान थाय ठे के कांइ पण कष्ट प्राप्त थशे. एने लोक सावा कहे ठे. (गोकीम्जाईउ के०) गोकी-टक जाति, ए जीव गाय प्रमुख पशुनां शरीरनां अवयवोमां उत्पन्न थाय ठे, ते तेउनी त्वचामां चोंटी रहेला होय ठे. एने कठी जाषामां चिच्चमी अथवा गींगोमा पण कहे ठे ॥१६॥ (गद्दहय के०) गमैया, ए जीव गौशाला प्रमुखमां उत्पन्न थाय ठे, एउनो वर्ण श्वेत होय ठे, एउने शास्त्रोमां उत्तिंगा पण कहे ठे. (चोरकीमा के०) ए जीव विष्टामां उत्पन्न थाय ठे. (गोमयकीमा के०) ए जीव ठाणमां उत्पन्न थाय ठे. (धन्नकीमा के०) ए जीव धान्यमां उत्पन्न थाय ठे, ते लोकमां धनेरीयां एवे नामे उलखाय ठे. (य के०) वली (कुंथु के०) ए जीव सूक्ष्म ठतां

पांच रंगना थाय छे, एने कुंथुआ पण कहे छे. (गुवालिय के०) गोपालिक, ए एक जातिना एवाज जीव थाय छे, ते अप्रसिद्ध छे. (इलिया के०) इलिका, ए जीव खांड अथवा चोखामां उत्पन्न थाय छे. (इंदगोवाई के०) इंद्रगोपादि, ए जीव वर्षाऋतुमां वरसाद पडे त्यारे उत्पन्न थाय छे, एनो अत्यंत रक्त वर्ण होय छे, एने लोकमां मेहना सामा पण कहे छे. इत्यादिक (तेइंदिय के०) तेइंद्रिय जीवो बीजा पण घणा छे ते सर्व जाणी लेवा. ए तेइंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय अने रसनेंद्रिय तथा घ्राणेंद्रिय ए त्रण इंद्रियो होय छे. एम ए तेइंद्रिय जीवोना भेद कह्या ॥ १७ ॥

हवे चौरिंद्रिय जीवोना भेद कहे छे:—

चउरिंदिया य विछू, ढिंकुण भमरा य भमरिया तिड्डा ॥ मच्छिय डंसा मस-गा, कंसारी कविल डोलाई ॥ १८ ॥

गाथा १८ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

चउरिंदिया=चौरिंद्रिय.	ढिंकुण=बगाइ.
विछू=वींछी.	भमरा=भ्रमर.

ज्ञमरिया=ज्ञमरी.	मसगा=मछर.
तिड्डा=तीड.	कंसारी=कंसारी.
मच्छिय=माखी.	कविल्ल=करोलीया.
डंसा=डांस.	डोलाई=खडमांकडी.

अर्थः—(चउरिंदिया के०) चौरिंद्रिय जीवो आ छेः—(विछ्रू के०) विंछु ए जातना फेरी जीवो थाय छे, तेना पूंछडामां एक कांटो होय छे, तेना मारथी माणसने विष चडे छे, ते विंछी एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे. (ढिंकुण के०) ए जीवो कांइक मक्षिकाने मलता होय छे, ते घोडाना तबेला प्रमुखने ठेकाणे उत्पन्न थाय छे, तेने लोकमां बगाइ कहे छे. (ज्ञमरा के०) ए जीवो काला वर्णना होय छे, अने ते घणुं करीने ज्यां सुगंधी पुष्पोनां वृक्षो होय छे त्यां रहे छे, ए जीवोने पुष्पोनो सुगंध घणो प्रिय होय छे, ए भ्रमर एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे. (ज्ञमरिया के०) भ्रमरिका, ए जीवो पीतादिक घणा रंगवाला होय छे, तेमज विविध आकारवाला होय छे. (तिड्डा के०) ए जीवो वर्षाऋतुना अवसानमां जे वखते धान्यनां वृक्ष पाकी रहेलां होय

छे ते वखते आकाशमार्गे अगणित संख्याबंध उमतां कोइ धान्यनां क्षेत्र वगेरे उपर आवीने पडे छे, ते जेटली जग्यामां आवी पडे छे तेटली जग्यानां फाड पान वगेरे सर्व खाइने खाली करी नाखे छे, ते तीड एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे. (मच्छिय के०) मक्षिका, ए जीवो लोकमां अति प्रसिद्ध छे, ए माखी एवे नामे ओलखाय छे, उपलक्षणथी मधु-मक्षिका पण जाणी लेवी. (डंसा के०) डांस, ए जीवो सिंधु देशमां प्रसिद्ध छे. ए घणुं करीने वर्षा-कालमां चीकणी जमीनमां उत्पन्न थाय छे. (मसगा के०) मसक, ए जीवो लोकमां मछर एवे नामे ओलखाय छे, ए लोकमां प्रसिद्ध छे. (कंसारी के०) ए जीवो घणुं करीने उजड घर प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (कविल के०) करोलीया अने (डोलाई के०) खडमांकडी, आदि शब्द थकी पतंग प्रमुख बीजा जे चौरिंद्रिय जीवो होय ते सर्व जाणी लेवा. ए जीवने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय तथा नेत्रेंद्रिय ए चार इंद्रियो होय छे ॥ १८ ॥

हवे पंचेंद्रिय जीवोना भेद कहे छेः—

पंचिंदिया य चउहा, नारय तिरिया
मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा,
नायव्वा पुढविभेएणं ॥ १९ ॥

गाथा १९ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

पंचिंदिया=पंचेंद्रिय.	नेरइया=नारकीना जीव.
चउहा=चार प्रकारना.	सत्तविहा=सात प्रकारना.
नारय=नारकी.	नायव्वा=जाणवा.
तिरिया=तिर्यंच.	पुढविभेएणं=(रत्नप्रभादि) पृथ्वीना भेदे करीने.
मणुस्स=मनुष्य.	
देवा=देवता.	

अर्थः—(पंचिंदिया के०) जेने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय तथा श्रोत्रेंद्रिय ए पांच इंद्रियो होय ते पंचेंद्रिय जीव कहेवाय छे, इहां "च" समुच्चयार्थमां छे. ते जीव (चउहा के०) चार प्रकारना छे. एक (नारय के०) नारकी, बीजा (तिरिया के०) तिर्यंच, त्रीजा (मणुस्स के०) मनुष्य, चोथा (देवा के०) देवता. तेउमां प्रथम (नेरइया के०) नारकीना जीव ते (पुढविभेएणं के०) रत्नप्रभादि पृथ्वीना भेदे करी (सत्तविहा के०)

सात प्रकारना छे. ते सात पृथ्वीउनां नाम कहे छेः—घमा, वंशा, सेला, अंजणा, रिठा, मघा तथा माघवती, ए सात ठेकाणे उत्पन्न थयेला जीवोने नारकी कहीए. तथा तेमनां गोत्रनां नाम कहे छे. रत्नप्रज्ञा, शर्कराप्रज्ञा, वालुकाप्रज्ञा, पंकप्रज्ञा, धूमप्रज्ञा, तमःप्रज्ञा तथा तमस्तमःप्रज्ञा, ए सात प्रकारने पर्याप्ताना तथा अपर्याप्ताना ज्ञेदे गणतां चौद ज्ञेद नारकी जीवोना थाय छे ॥ १ए ॥

हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना ज्ञेद कहे छेः—

जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचें-
दिया तिरिरका य ॥ सुसुमार मह क-
छव, गाहा मगराइ जलचारी ॥ २० ॥

गाथा २० मीना बूटा शब्दना अर्थ.

जलयर=जलचर.
थलयर=थलचर.
खयरा=खेचर.
तिविहा=त्रण प्रकारना.
पंचेंदिया=पंचेंद्रिय.
तिरिरका=तिर्यंच.
सुसुमार=सुसुमार.
मह=माछलां.
कछव=काचबो.
गाहा=फुंरू.
मगराइ=मगर विगेरे.
जलचारी=जलचर जीव.

अर्थः—(तिरिक्खा पंचेंदिया तिविहा के०) तिर्यंच पंचेंद्रिय त्रण प्रकारना छे, ते आः—एक (जलयर के०) जलचर एटले जे जीवो पाणीमां उत्पन्न थाय, पाणीमां रहे तथा पाणीमांज नाश पामे ते जलचर जीव जाणवा. बीजा (थलयर के०) स्थलचर एटले जे जीवोनी उत्पत्ति, स्थिति तथा नाशनो संभव जलचरोनी पेठे पृथ्वी उपर होय ते, तथा त्रीजा (खयरा के०) खेचर एटले जे जीवोनी चालवानी स्थिति आकाशने विषे होय ते जाणवा. तेउमां प्रथम जलचर जीवना मुख्य पांच भेद छे ते आ प्रमाणेः—एक (सुसुमार के०) पाडाना जेवा मत्स्य होय छे, ते घणुं करी मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां दीठामां आवे छे, बीजो (मछ के०) नाना प्रकारनां जे बीजां माछलां दीठामां आवे छे ते, ए जातिना जीवो घणुं करी खारा समुद्रमां विशेष दीठामां आवे छे, त्रीजो (कछव के०) कछप, ए जीवो घणुं करी मीठा पाणीना तलाव अथवा खोदेला कूवाना पाणीमां दीठामां आवे छे, एनी त्वचा घणी कठिन होय छे अने तेमांथी ढाल ए

नामनां हथियार देहरक्षणार्थे लोक करे छे, ए जीवने लोकमां काचबाना नामे ओलखे छे, चोथो (गाहा के०) ए जीवो समुद्रमां तेमज मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां पण थाय छे. ए जीव तंतु आकारे होय छे, ने अति बलवान् होय छे, पाणीमां एनुं एटलुं जोर होय छे के ते हाथीने पण घसडी जाय छे, एने लोकमां कुंरू एवे नामे ओलखे छे, पांचमो (मगर के०) मगर, ए जीव समुद्रमां होय छे, एनुं शरीर अति विशाल होय छे, ए लोकमां मगरमत्स्य एवे नामे ओलखाय छे, ए (आइ के०) आदि शब्दे करी बीजा पण (जलचारी के०) जलचर जीव घणा प्रकारना छे. ए जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवना भेद कह्या ॥ २० ॥

हवे स्थलचर जीवोना भेद कहे छेः—

चउपय उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य
थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल-
पमुहा, बोधव्वा ते समासेणं ॥ २१ ॥

गाथा २१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

चउपय=चार पगवालां. | उरपरिसप्पा=उरःपरिसर्प.

भुयपरिसप्पा=भुजपरिसर्प.
थलयरा=स्थलचर जीव.
तिविहा=त्रण प्रकारना.
गो=गाय.
सप्प=सर्प.
नउल=नोलिया.
पमुहा=प्रमुख.
बोधवा=जाणवा.
समासेणं=संक्षेपथी.

अर्थः—(थलयरा तिविहा के०) स्थलचर जीवो त्रण प्रकारना छे, ते आः—एक (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवालां सर्व प्रकारनां पशुउं जाणी लेवां, बीजा (उरपरिसप्पा के०) उरःपरिसर्प ए जीवो उदरथी चाले छे. एनी नाग प्रमुख घणी जाति होय छे, एमां केटलाएक जीवो विषरहित होय छे, अने केटलाएक विष सहित होय छे. ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (य के०) वली त्रीजा (भुयपरिसप्पा के०) भुजपरिसर्प ए जीवो भुजा वडे चाले छे. ते नोलिया प्रमुख जाणी लेवा. ए उपर कह्या जे त्रण प्रकारना स्थलचर जीवो तेउं अनुक्रमे (गो के०) गाय प्रमुख ते चतुष्पद, (सप्प के०) सर्प प्रमुख ते उरःपरिसर्प तथा (नउलपमुहा के०) नोलिया प्रमुख ते भुजपरिसर्प, ए (समासेणं के०) संक्षेपमात्रे करी (बोधवा के०) जाणी लेवा. ए स्थलचर जीवोना भेद कह्या ॥ २१ ॥

हवे खेचर जीवोना भेद कहे छे:-

खयरा रोमयपरकी, चम्मयपरकी
य पायरु चेव ॥ नरलोगाउ बाहिं,
समुग्गपरकी वियययपरकी ॥ २२ ॥

गाथा २२ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

खयरा=खेचर जीव.
रोमय=रुंवाटांनी पांखवालां.
परकी=पक्षी.
चम्मय=चामरुानी पांखवालां.
पायरु=प्रगट.
चेव=निश्चे.
नरलोगाउ=मनुष्यलोकनी.
बाहिं=बहार.
समुग्ग=संकोचेली पांखवालां.
वियय=विस्तारेली पांखवालां.

अर्थ:-(खयरा के०) खेचर जीवो ते आकाशने विषे विचरनारां जे पक्षीउ ते बे प्रकारनां छे:-एक (रोमयपरकी के०) रोमज पक्षीउ, एटले जेउनी पांखो रोमसंयुक्त होय छे,जेवां के, शुक, हंस तथा सारसादिक पक्षीउ तेमज पारेवां, कागरु, चकलां, पोपट प्रमुख एनी पांख मोवालानी होय छे, ते (य के०)बीजां (चम्मयपरकी के०) चर्मज पक्षीनो (पायरु के०) प्रगट अर्थ छे. एटले जेउनी पांखो चामरुाना जेवी होय छे तेने चर्मज पक्षी कहीए. जेवां के, चामाची-

ळियां अथवा चर्मचीटिका, तथा वरूवागुल अथवा वल्गुली प्रमुख ए (चेव के०) निश्चे लोकमां प्रसिद्ध छे, अने (नरलोगाउ बाहिं के०) मनुष्यलोकनी बहार (समुग्गपक्खी के०) समुज्ञ पक्षीउं, तथा (वियपक्खी के०) वितत पक्षीउं होय छे. ते मनुष्यलोकनुं प्रमाण शास्त्रोमां आवी रीते कह्युं छेः— जंबुद्वीप, धातकी खंरू तथा पुष्करवर द्वीपना अर्ध नाग सुधी मनुष्योनी वस्ती छे एटले ए अढी द्वीपमां मनुष्यो छे. ते अढी द्वीपमांना प्रथम जंबुद्वीपने चोफेर खाइनी पेठे लवण समुद्र वींटी रह्यो छे तथा वीजा धातकी खंरूने कालोदधि वींटी रह्यो छे अने अढी द्वीपनी चोफेर स्वर्णमय मानुष्योत्तर पर्वत किल्लानी पेठे वेष्टित थइ रहेलो छे. ए नरलोकक्षेत्रनुं प्रमाण एकंदर पीस्तालीश लाख योजननुं कह्युं छे. इहांज मनुष्योनां जन्म तथा मरणनो संनव होवाथी ए मनुष्यलोक कहेवाय छे, तेथी वहार उपर कहेलां बे जातिनां पक्षीउं होय छे, तेमां समुज्ञवत् समुज्ञ पक्षीउंनी पांख बेसती वखते संकोचने पामे छे, अने वितत पक्षीउंनी पांख सर्वदा विस्तारेलीज होय छे. ए सर्व खेचर जीवो जाणवा ॥२३॥

हवे उपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या ते एकेकना वली बे बे भेद बीजी रीते कहे छेः—

सवे जल थल खयरा, समुच्छिमा गब्भ-
या उहा हुंति ॥ कम्माकम्मग भूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

गाथा २३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सवे=सर्व प्रकारना.	उहा=बे प्रकारना.
जल=जलचर.	हुंति=छे.
थल=स्थलचर.	कम्माकम्मग भूमि=कर्मभूमि अने अकर्मभूमिना.
खयरा=खेचर.	अंतरदीवा=अंतरद्वीपना.
समुच्छिमा=संमूर्छिम.	मणुस्सा=मनुष्य.
गब्भया=गर्भज.	

अर्थः— ए उपर कहेला (सवे के०) सर्व प्रकारना (जल थल खयरा के०) जलचर, स्थलचर तथा खेचर जीवो ते एक (समुच्छिमा के०) संमूर्छिम अने बीजा (गब्भया के०) गर्भज ए (उहा के०) द्विधा एटले बे प्रकारना (हुंति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार होवाथी छ भेद थया. तेमां जे जीवो माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय ते संमूर्छिम कहेवाय छे अने जे जीवो गर्भमां उत्पन्न

थाय ते गर्भज कहेवाय छे. तिहां एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय ए सर्व जीव संमूर्छिमज होय छे. ए तिर्यंचना सर्व मली अडतालीश भेद थाय छे ते आवी रीतेः—प्रथम एकेंद्रिय जीव बधा थावर कहेवाय छे. तेना बावीश भेद आगल चौदमी गाथाना अर्थमां दर्शाव्या छे, अने बीजा त्रस जीवना बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने पंचेंद्रिय ए चार भेद मूल छे; तेमां बेइंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रियने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणतां छ भेद थाय ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलवतां अठ्यावीश भेद थया.

हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना वीश भेद छे ते देखाडे छे. जलचर, थलचर, खेचर, उरःपरिसर्प अने भुजपरि-सर्प, ए मूल पांच भेद संमूर्छिमना अने पांच गर्भ-जना मली दश भेद थाय. ते दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्ता मली वीश भेद थया, तेने पूर्वोक्त अठ्या-वीश साथे मेलवतां अडतालीश भेद तिर्यंचना थाय. ए रीते गाथाना पूर्वार्धमां पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं वर्णन कर्युं. हवे गाथाना उत्तरार्धमां पंचेंद्रिय मनुष्यना भेद कहे छेः—

(कम्माकम्मग ञूमि के०) कर्मञूमिमां उत्पन्न थयेला, अकर्मञूमिमां उत्पन्न थयेला तथा (अंतरदीवा मणुस्सा य के०) अंतरद्वीपमां उत्पन्न थयेला ए त्रण प्रकारना मनुष्य होय ठे. तेमां कृषि वाणिज्यादिक कर्मप्रधान ञूमि ते कर्मञूमि कहीए. ते ञूमिने विषे जे मनुष्य उत्पन्न थाय ठे ते कर्मञूमिज कहेवाय ठे. ते कर्मञूमिउं अढी द्वीपमां पंदर ठे अने जेमां कृषि वाणिज्यादि कर्म नथी एवी अकर्मञूमिउं त्रीश ठे, तथा अंतरद्वीप ठप्पन ठे ते आ प्रमाणेः— ए जंबुद्वीपना मध्यञागे मेरु पर्वत ठे. ते मेरुथी दक्षिण दिशे लवण समुद्रने लगतुं लवण समुद्रनी उत्तर दिशे ञरत क्षेत्र ठे ते कर्मञूमिज ठे तथा ते ञरत क्षेत्रने उत्तर दिशिने ठेडे हेमवंत पर्वत ठे, ते पर्वत मूकी तेनी उत्तर दिशिमां हिमवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र ठे, अने वली मेरुथी उत्तर दिशे लवण समुद्रने लगतुं समुद्रनी दक्षिण दिशे ऐरवत क्षेत्र ठे ते कर्मञूमिज ठे. ते ऐरवतनी दक्षिण दिशिने ठेडे शिखरी नामे पर्वत ठे, ते पर्वत मूकीने तेनी दक्षिण दिशे एक हिरण्यवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र ठे एटले पूर्वे कहेलां एक हिमवंत अने बीजुं हिरण्यवंत ए बे

अकर्मभूमि क्षेत्र छे; एने विषे युगलिया मनुष्य रहे छे, तेनुं सदाकाले एक गाउ देहमान अने एक पल्योपमनुं आयु छे. त्यां सदाकाल त्रीजो आरो वर्त्ते छे.

तथा वली ते पूर्वोक्त हिमवंत नामे युगलियाना क्षेत्रथी उत्तर दिशे एक महाहिमवंत पर्वत छे, ते पर्वतनी उत्तर दिशे हरिवर्ष नामे युगलियानुं क्षेत्र छे तथा पूर्वोक्त हिरण्यवंत नामे युगलियाना क्षेत्रथी दक्षिण दिशे एक रूपी नामे पर्वत छे, ते पर्वतनी दक्षिण दिशे एक रम्यक नामे युगलियानुं क्षेत्र छे. ए रीते एक हरिवर्ष तथा बीजुं रम्यक ए बे अकर्मभूमि क्षेत्रमां युगलियां वसे छे, तेनुं सदाकाले बे गाउ देहमान अने बे पल्योपमनुं आयु छे. त्यां सदाकाल बीजो आरो वर्त्ते छे.

तथा वली हरिवर्ष नामे युगलियाना क्षेत्रथी उत्तर दिशे मेरुनी तरफ लाल हिंगला जेवा वर्णे निषध नामे पर्वत छे, तेनी पासे एक देवकुरु नामे युगलियानुं क्षेत्र छे तथा वली मेरु थकी उत्तर दिशे जे रम्यक नामे युगलियानुं क्षेत्र छे तेनाथी दक्षिण दिशे नील वर्णे एक नीलवंत नामे पर्वत छे, ते पर्वत थकी दक्षिण दिशे मेरुनी

पासे एक उत्तरकुरु गामे युगलियानुं क्षेत्र छे. एटले एक देवकुरु अने बीजुं उत्तरकुरु ए बे अकर्मभूमि क्षेत्र, तेने विषे युगलिया मनुष्य रहे छे. तेनुं सदा काल त्रण गाउनुं देहमान छे अने त्रण पल्योपमनुं आयु छे. तिहां सदाकाल पहेलो आरो वर्त्ते छे.

तथा निषध अने नीलवंत ए बे पर्वतो कह्या तेनी वचाले मेरु पर्वत छे, ते मेरुनी चारे दिशि मांहेथी पूर्व दिशे पूर्व महाविदेहनी सोल विजय छे अने पश्चिम दिशे पश्चिम महाविदेहनी सोल विजय छे. ए बेहु मली बत्रीश विजयनुं एक महाविदेह नामे कर्मभूमि क्षेत्र छे.

ए रीते प्रथम जंबुद्वीपने विषे एक हेमवंत अने हिरण्यवंत, बीजुं हरिवर्ष ने रम्यक, त्रीजुं देवकुरु ने उत्तरकुरु, ए त्रण जोमले मली छ क्षेत्र युगलिया मनुष्यनां छे ते अकर्मभूमिज कहीए, कारण के ए क्षेत्रमां जे मनुष्य रहे छे तेने प्रायः कर्म थोमां लागे छे, केमके असि, मसि ने कृषि ए त्रण वस्तु कर्मबंधनुं कारण छे ते वस्तु ए क्षेत्रोमां नथी, अने एक भरत, एक ऐरवत तथा एक महाविदेह मली त्रण क्षेत्र कर्मभूमिज छे.

ए रीते बीजो धातकीखंड द्वीप अने पुष्करव-रनो अर्ध ए दोढ द्वीपमां प्रत्येके प्रत्येके एक पूर्व दिशिए अने बीजो पश्चिम दिशिए मली बे बे मेरु पर्वत छे, अने ज्यां एक मेरु होय त्यां एक जरत, एक ऐरवत तथा एक महाविदेह, ए त्रण कर्मजूमि क्षेत्र होय अने पूर्वोक्त जंबुद्वीपनी पेठे छ युगलियानां क्षेत्र होय ते वारे बे जरत, बे ऐरवत, बे महाविदेह, ए छ क्षेत्र कर्मजूमिनां अने बे हेमवंत, बे हिरण्यवंत, बे हरिवर्ष, बे रम्यक, बे देवकुरु अने बे उत्तरकुरु, ए सर्व मली बार युगलियानां क्षेत्र धातकी नामे बीजा द्वीपमां छे अने तेटलांज वली पुष्करार्ध नामे त्रीजा अर्धा द्वीपमां पण छे, केमके ए बेहु द्वीपमां प्रत्येके बे बे मेरु छे.

ए रीते ए अढी द्वीपनां क्षेत्रने एकठां करीए ते वारे त्रीश क्षेत्र अकर्मजूमिनां अने पंदर क्षेत्र कर्मजूमिनां थाय, सरवाले पीस्तालीश क्षेत्र मनुष्यनां थयां.

हवे वली छप्पन जेद बीजा देखाडे छे. जंबुद्वीप मांहेला जरत क्षेत्रना उत्तरने छेडे हेमवंत नामे पर्वत छे. ते पूर्व दिशे अने पश्चिम दिशे लवण समुद्र पर्यंत लांबो छे. ते पर्वतनी पूर्व तथा पश्चिम एकेकी

दिशे लवण समुद्र मध्ये बे बे दाढाउं नीकली छे ते वारे बे दिशिनी चार दाढाउं थइ, तेवीज रीते ऐरवत क्षेत्रने दक्षिणने छेडे शिखरी नामे पर्वत छे, ते पण पूर्व पश्चिम हेमवंतनी परे लांबो छे. तेमांथी पण हेमवंतनी रीते बे दिशिए मली चार दाढाउं समुद्रमां नीकली छे. ए बे पर्वतनी आठ दाढाउं मांहेली एकेकी दाढाने विषे सात सात अंतरद्वीप छे, ते वारे आठ दाढाउंने विषे छप्पन अंतरद्वीप थया तेने विषे पण युगलिया रहे छे, तेने अंतरद्वीपनां मनुष्य कहीए. ते मनुष्य एकांतरे आहार लीए छे, तथा तेमनां शरीरनी उंचाइ आठसो धनुष्यनी, अने पल्योपमना असंख्यातमा जाग जेटलुं तेमनुं आयु छे. ए प्रमाणे मनुष्यना पीस्तालीश जेद पूर्वे कह्या तेनी साथे ए अंतरद्वीपना छप्पन जेद मेलवतां १०१ जेद थाय, तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे प्रकारे गुणीए ते वारे २०२ जेद थाय तथा वली एहीज गर्जज मनुष्यनां मल, मूत्र, श्लेष्म प्रमुख चौद स्थानकने विषे जे उपजे तेने संमूर्छिम मनुष्य कहीए. ते संमूर्छिम मनुष्य सर्व अधुरी पर्याप्तिएज मरण पामे छे, माटे ए अपर्याप्ताज होय, तेथी एना १०१ जेद पूर्वोक्त

२०२ नी साथे मेलवतां ३०३ नेद थाय छे ॥ २३ ॥

हवे चार निकायना देवोना नेद कहे छेः—

दसहा नवणाहिवई, अठविहा वाण-
वंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
डुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥

गाथा २४ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.
नवणाहिवई=नवनाधिपति, (नवनपति).
अठविहा=आठ प्रकारना.
वाणवंतरा=वाणव्यंतर देवो.
हुंति=छे.
जोइसिया=ज्योतिषी.
पंचविहा=पांच प्रकारना.
डुविहा=बे प्रकारना.
वेमाणिया=वैमानिक.
देवा=देवो.

अर्थः— नवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक, ए चार प्रकारना जे देव छे तेउमांना (दसहा नवणाहिवई के०) नवनाधिपति देवोना दश नेद छे, ते आः—असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशिकुमार, वायुकुमार तथा स्तनितकुमार, ए दश नेद कह्या. हवे एनुं रहेवानुं स्थान कहे छेः—रत्नप्रना नामे प्रथम नरकनुं दल जाडपणे १८०००० योजननुं

छे, तेमां तेर पाथडा छे, ते तेर पाथडाना बार आंतरा छे, तेमांथी पहेलो अने छेल्लो आंतरो मूकीने बाकीना दश आंतरा वचाळे रह्या, ते मांहे एकेके आंतरे एकेका भवनपति देवोनी निकाय छे, ते दशे निकायमां प्रत्येके एक दक्षिणे अने एक उत्तरे मळी बे बे इंद्र छे, ते वारे दश निकायना वीश इंद्र छे. ए प्रथम भवनपति देवोने रहेवानुं स्थानक कह्युं.

हवे ए बीजा व्यंतर निकायना देवो कहे छे. (अठविहा वाणवंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो छे, तेमां व्यंतर देवोना आठ भेद छे, ते आः—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग अने गंधर्व, तथा बीजा अणपन्नी, पणपन्नी, ऋषिवादी, भूतवादी, कंदित, महाकंदित, कोहंड अने पतंग, ए आठ भेद जे छे ते वाण-व्यंतर देवोना जाणवा.

मेरु पर्वतना मूळमां सरखी पृथिवी छे. त्यांथी मांडी नीचे जइए ते वारे (१८००००) योजन रत्नप्रभा पृथिवीना तळीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचे मूकीए, बाकी (१७८०००)योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथडा छे, तेमां

दश भवनपतिना देवो रहे छे, अने उपरला एक हजार योजन मूक्या छे तेमांथी वली सो योजन हेठल अने सो योजन उपर मूकी वाकी आठसो योजन रह्या तेमां आठ व्यंतरनी निकाय छे. ए आठ निकायमां पण दक्षिण अने उत्तर दिशि मली एकेकी निकायना बे बे इंद्र छे, ते वारे सोल इंद्र व्यंतर देवोना छे तथा वली उपरला जे एकसो योजन मूक्या छे तेमांथी वली दश योजन उपर तथा दश योजन नीचे मूकीए, वाकी एंशी योजन रहे तेमां आठ प्रकारना वाण-व्यंतर देवो रहे छे. एमां पण पूर्वोक्त रीते एकेकी निकायने विषे बे बे इंद्र गणतां सोल इंद्र वाणव्यं-तर देवोना छे. सर्व मली बे प्रकारना व्यंतर देवोना बत्रीश इंद्र छे. तेनी साथे पूर्वोक्त भवनपति देवोना वीश इंद्र मेलवीए ते वारे बावन इंद्र थाय.

हवे त्रीजा ज्योतिषी देवोनी निकायना देवो कहे छे. (जोइसिया पंचविहा के०) ज्योतिष्क देवोना पांच भेद छे, ते आः—चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तथा तारा. ते फरी बे प्रकारना छेः— एक चर ने बीजा स्थिर. तेमां जे मनुष्यक्षेत्रने विषे ज्योतिषी छे ते चर एटले अस्थिर सदाकाल फरता रहे छे,

अने जे मनुष्यक्षेत्रथी बहार छे ते स्थिर छे, केमके तेमनां विमान फरतां नथी. जे ज्यां छे ते त्यां स्थिर रह्यां छे. एना पांच भेदमांथी एक चंद्रमा अने बीजो सूर्य, ए बेने इंद्रपदवी छे; बीजाने इंद्रपदवी नथी. मेरुने मूले संभूतला पृथ्वी थकी सातसें नेवुं योजन उंचा जइए तिहां तारानां विमान छे, तिहांथी दश योजने सूर्यनुं विमान छे, तिहांथी एंशी योजने चंद्रमानुं विमान छे, तिहांथी चार योजन उंचा नक्षत्रनां विमान छे, तेथी उंचा सोल योजनमां वली जूदा जूदा ग्रहनां विमान छे. ए रीते सर्व मली सातसें नेवुं योजनथी उपरे एकसो दश योजनमां ज्योतिषी देव रहे छे.

हवे चोथा वैमानिक देवोनी निकायना देवो कहे छे. (दुविहा वेमाणिया देवा के०) वैमानिक देवोना बे भेद छे, ते कहे छे. एक तो जे श्रीतीर्थंकरादिकना पांच कल्प एटले आचार जाणवा, माटे एने कल्पोपपन्न देवो कहीए. ते देवता सौधर्म, ईशानादि बार देवलोकना भेदे करी बार प्रकारे छे. ते बार देवलोकमां वली आठ देवलोक पर्यंत तो प्रत्येके एकेको इंद्र छे, अने नवमा तथा दशमा

ए बे देवलोके एक इंद्र छे, अने अगीयारमा तथा बारमा ए बे देवलोके पण एक इंद्र छे. ए रीते बार देवलोकना मली दश इंद्र छे, अने पूर्वे भवनपतिना वीश तथा व्यंतरना बत्रीश अने ज्योतिषीना बे मली चोपन इंद्र कह्या तेनी साथे ए दश इंद्र मेलवीए ते वारे सर्व मली चोसठ इंद्र थाय. ए सर्व कल्पोपपन्न देवता कहेवाय.

हवे बीजा जे कल्प एटले आछ्या गयानो आचार तेणे करी रहित छे तेने कल्पातीत देवो कहीए. तेना वली बे भेद छे. एक तो नव ग्रैवेयकना देवो अने बीजा पांच अनुत्तर विमानना देवो जाणवा.

हवे ए कल्पोपपन्न तथा कल्पातीत देवोनां स्थानक कहे छे. चौद राजलोक छे तेमां सात राज नीचे साते नारकीए करी पूर्यो छे अने सात राज उंचो छे. ए चौद राजलोक पुरुषने आकारे छे, तेमां नाभिने स्थानके मनुष्यलोक छे अने मेरुने मूले संभूतला पृथिवी छे,त्यांथी सातसें नेवुं योजनथी मांमीने नवसें योजन पर्यंत उंचा ज्योतिषी देवो रहे छे, तेवार पछी एक राजने आशरे उंचा जइए तिहां दक्षिण दिशे सौधर्म देवलोक अने उत्तर दिशे ईशान देवलोक

ए रीते बे देवलोक जोमाजोडे छे. तेवारे वली त्रीजो सनत्कुमार दक्षिण दिशिए अने चोथो माहेंद्र उत्तर दिशे,ए रीते बे देवलोक जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली पांचमो ब्रह्म देवलोक, छठो लांतक, सातमो शुक्र, आठमो सहस्रार, ए चार देवलोक अनुक्रमे एक एकनी उपर केटले केटले आंतरे एकला एक-लाज छे. तेवार पछी वली केटलाएक उंचा जइए त्यां नवमो आनत अने दशमो प्राणत ए बे देव-लोक दक्षिण अने उत्तरे जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली पण केटलाएक उंचा जइए तेवारे अगीया-रमो आरण अने बारमो अच्युत ए बे देवलोक दक्षिण अने उत्तर दिशे जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली केटलाएक उंचा जइए तेवारे चौद राजलोक-रूप पुरुषना गलाने स्थानके नव ग्रैवेयक छे. तेवार पछी वली केटलेक उंचे पांच अनुत्तर विमान छे. तेवार पछी चौद राजलोकरूप पुरुषना ललाटने ठेकाणे सिद्धशिला छे, ते स्फटिक रत्नी परे निर्मल छे, तिहां सिद्धना जीवो रह्या छे. एम ए देवताने रहेवानां स्थानक कह्यां. हवे इहां वली त्रण प्रकारना किल्बिषिया देवो तथा नव प्रकारना

लोकांतिक देवो छे तेने रहेवानां स्थानक कही बतावे छे. त्यां प्रथम किल्विषिया देवोनां स्थानक कहे छे. एक तो पहेला अने बीजा देवलोकनी नीचे त्रण पल्योपमना आयुवाला रह्या छे अने बीजा वली त्रीजा तथा चोथा देवलोकनी नीचे त्रण सागरोपमना आयुवाला रह्या छे, तथा त्रीजा वली पांचमा देवलोकनी नीचे तेर सागरोपमना आयुवाला रह्या छे. ए त्रण प्रकारना किल्विषिया देवो चंमालप्राय: जाणवा तथा वली पांचमा देव-लोकने छेडे उत्तर अने पूर्वनी अभ्यंतर कृष्णरा-जीमां नव प्रकारना लोकांतिक देवो रहे छे, एनुं आठ सागरोपमनुं आयु छे.

ए सर्व देवोना वधा मली एकसो ने अठाणुं नेद शास्त्रोमां कह्या छे, ते आ प्रमाणे:—नवनपतिना दश नेद, चर ज्योतिषीना पांच नेद, स्थिर ज्योति-षीना पांच नेद, वैताढ्यने विषे रहेनारा तिर्यग्जृं-नक देवोना दश नेद, नारकी जीवोने डुःख आप-नारा परमाधामीना पंदर नेद, व्यंतरना आठ नेद, वाणव्यंतरना आठ नेद, किल्विषियाना त्रण नेद, लोकांतिकना नव नेद, वार देवलोकना वार नेद,

नव ग्रैवेयकना नव भेद, पांच अनुत्तर विमानोना पांच भेद, ए सर्व मली नवाणुं भेद थया. एने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे भेदे गुणतां एकसो ने अठाणुं भेद थाय छे ॥ २४ ॥

ए रीते पूर्वोक्त तिर्यंचना अमतालीश, नारकीना चौद, मनुष्यना त्रणसें ने त्रण तथा देवताना एकसो ने अठाणुं मली जीवोना ५६३ भेदो थया. एम चौद राजलोकमां जीवादिक छ द्रव्य छे, तेमां एक जीव द्रव्यना एक संसारी अने बीजा सिद्ध ए बे भेद पूर्वे कह्या हता, तेमांथी संसारी जीवोना पांचसें त्रेसठ भेद संक्षेपे कही देखाड्या, ए संसारी जीवोनो विचार कह्यो.

हवे बीजा सिद्ध जीवोना भेद कहे छेः—

सिद्धा पनरस भेया, तिछ अतिछाइ सिद्धभेएणं ॥ एए संखेवेणं, जीववि- गप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥

गाथा २५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सिद्धा=सिद्ध.
पनरस=पंदर.
भेया=भेदो.
तिछ=तीर्थंकर.

अतिछाइ=अतीर्थंकरादि.
सिद्धन्नेएणं=सिद्धना न्नेदे करी.
एए=ए.
संखेवेणं=संक्षेपथी.
जीवविगप्पा=जीवना विकल्प (न्नेदो).
समरकाया=कह्या.

अर्थः—(सिद्धा के०) सिद्ध ते सर्व कर्मोथी मुक्त थयेला जीवो, तेना (तिछ अतिछाइ के०) तीर्थंकर तथा अतीर्थंकरादि (सिद्धन्नेएणं के०) सिद्धना न्नेदे करी (पनरस न्नेया के०) पंदर न्नेद थाय छे. ते पंदर न्नेदनां नाम नव तत्त्वना बालावबोध थकी जाणवां. (एए संखेवेणं के०) ए पूर्वोक्त सर्व संक्षेपे करीने (जीवविगप्पा के०) जीवना विकल्प एटले न्नेद ते (समरकाया के०) रुडे प्रकारे कह्या छे ॥ २५ ॥

हवे जे आगल कहेवा योग्य छे ते मूल ग्रंथकर्त्ता पोतेज गाथा वडे कहे छे.

एएसिं जीवाणं, सरीरमाऊ ठिई सकायंमि ॥ पाणा जोणिपमाणं, जेसिं जं अछि तं न्नणिमो ॥ २६ ॥

गाथा २६ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एएसिं जीवाणं=ए जीवोनुं.	जोणि=योनि.
सरीरं=शरीर.	पमाणं=प्रमाण.
आऊ=आयुष्य.	जेसिं=जेमनुं.
ठिई=स्थिति.	जं=जेटलुं.
सकायंमि=पोतानी कायने विषे.	अत्थि=छे.
पाणा=प्राण.	तं भणिमो=तेटलुं कहीशुं.

अर्थः—(एएसिं के०) ए पूर्वोक्त एकेंद्रियादिक (जीवाणं के०) जीवोना एक (सरीरं के०) शरीरनुं प्रमाण, बीजुं (आऊ के०) जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी आयुष्यनुं प्रमाण, त्रीजुं (ठिई सकायंमि के०) एकेंद्रियादिक जीवो मरण पामीने फरी त्यांज उत्पन्न थाय एवी जे स्वकायस्थिति तेनुं प्रमाण, चोथुं (पाणा के०) इंद्रियादिक दश प्राणोनुं प्रमाण, पांचमुं (जोणिपमाणं के०) चोराशी लक्ष योनि मांहेली कया कया जीवोमां केटली केटली योनिओ होय तेनुं प्रमाण, ते (जेसिं जं अत्थि के०) जे जे जीवोनुं जेटलुं छे (तं भणिमो के०) ते जीवोनुं तेटलुं अमे कहीशुं ॥ २६ ॥

त्यां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छेः—

अंगुल असंख भागो, सरीरमेगिं-
दियाण सवेसिं ॥ जोयण सहस्स-
महियं, नवरं पत्तेय रुक्खाणं ॥ २७ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

अंगुल=अंगुलना.
असंख=असंख्यातमा.
भागो=भाग जेटलुं.
सवेसिं एगिंदियाण=सर्वे एकेंद्रिय जीवोनां.
जोयण=योजन.
सहस्सं=हजार.
अहियं=अधिक.
नवरं=विशेष.
पत्तेय रुक्खाणं=प्रत्येक वनस्पतिना.

अर्थः— (सवेसिं एगिंदियाण सरीरं के०) सर्वे सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण (अंगुल असंख भागो के०) अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे, (नवरं के०) पण एटली विशेषता छे जे (पत्तेय रुक्खाणं के०) प्रत्येक वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण (जोयण सहस्समहियं के०) एक हजार योजनथी कांइक अधिक होय छे. ते समुद्रादिकने विषे उत्सेधांगुल प्रमाण हजार योजनना उंडा पाणीमां पद्मनाल होय छे तथा आ

अढी द्वीपथी बहार एवी लताउं पण होय छे.
अहीं यद्यपि सामान्यपणे पृथ्वीकायादिक एकें-
द्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण अंगुलनो असंख्या-
तमो नाग मात्र कह्युं छे, तथापि संग्रहिण्यादिकने
विषे विशेषे करी जाणवामां आवे छे के अंगुलना
असंख्यातमा नागना पण असंख्य नेद छे. एवी रीते
ते एकेंद्रियना शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे द्वींद्रियादिक विकलेंद्रिय जीवोनां
शरीरोनुं प्रमाण कहे छेः—

बारस जोयण तिन्ने,—व गाउआ जो-
यणं च अणुकमसो ॥ बेइंदिय तेइं-
दिय, चउरिंदिय देहमुच्चत्तं ॥ २७ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

बारस=बार.
जोयण=योजन.
तिन्नेव=त्रण.
गाउआ=गाउ.
जोयणं=एक योजन.
अणुकमसो=अनुक्रमे.
देहं=शरीर.
उच्चत्तं=उंचपणुं.

अर्थः—मनुष्यक्षेत्रनी बहार रहेला (बेइंदिय के०)
शंखादिक बेइंद्रिय जीवनां शरीरनी उंचाइ (बारस

जोयण के०)बार योजननी होय छे, अढी द्वीपनी वहार रहेला (तेइंदिय के०) कर्णशृंगालादिक तेइंद्रिय जीवोनां शरीरनी उंचाइ (तिन्नेव गाउआ के०) त्रण गाउनी होय छे, (च के०) तथा अढी द्वीपनी वहार रहेला (चउरिंदिय के०) भ्रमरादिक चौरिंद्रिय जीवोनां (देहमुच्चत्तं के०) शरीरनुं उंचपणुं (जोयणं के०) एक योजननुं होय छे. (अणुक्कमसो के०) गाथाना पदना अनुक्रमे एटले बेइंद्रियने बार योजन वगेरे कहेवा ॥ १७ ॥ ए विकलेंद्रिय जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे नारकी आदिक पंचेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण कहेतो थको प्रथम नारकी जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कहे छे.

धणुसयपंच पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ १९ ॥

गाथा १९ सीना छूटा शब्दना अर्थ.

धणु=धनुष्य.
सयपंच=पांचसें.
पमाणा=प्रमाण.
नेरइया=नारकीउ.

सत्तमाइ=सातमी आदि.
पुढवीए=पृथ्वीने विषे.
तत्तो=तेथी.
अद्धद्धूणा=अर्धा अर्धा उंचा.
नेया=जाणवुं.
रयणप्पहा=रत्नप्रभा.
जाव=ज्यांसुधी.

अर्थः—(सत्तमाइ पुढवीए के०) तमस्तमःप्रभा नामनी सातमी आदि नरकपृथ्वीमां रहेनारा (नेरइया के०) नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण आवी रीते छेः—(धणुसयपंच पमाणा के०) सातमी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण पांचसें धनुष्य जेटली उंचाइनुं छे. एम अनुक्रमे (तत्तो अद्धद्धूणा के०) तेथी अर्ध अर्ध संख्या उणी करवी, एटले अढीसें धनुष्य जेटला प्रमाणनुं शरीर छठ्ठी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. सवासो धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण पांचमी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. साडा बासठ धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण चोथी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. सवा एकत्रीश धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण त्रीजी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. साडा पंदर धनुष्य अने बार अंगुल उंचाइनुं प्रमाण बीजी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे.

अनुक्रमे (जाव रयणप्पहा के०) यावत् रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण पोणा आठ धनुष्य अने छ अंगुलनुं (नेया के०) जाणवुं.एटलुं स्वाभाविक देहनुं प्रमाण होय छे ते कह्युं; पण एनुं वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण तो एथी बमणुं होय छे ॥ २९ ॥ एम नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण कह्युं.

हवे तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण अढी गाथाए करी कहे छेः—

जोयण सहस्स माणा, मछा उरगा य
गप्नया हुंति ॥ धणुअ पुहुत्तं पक्खिसु,
भुयचारी गाउअ पुहुत्तं ॥ ३० ॥
खयरा धणुअ पुहुत्तं, भुयगा उरगा य
जोयण पुहुत्तं॥गाउय पुहुत्त मित्ता, समु-
छिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव
गाउआइं, चउप्पया गप्नया मुणेयव्वा ॥

गाथा ३० मीना बूटा शब्दना अर्थ.

जोयण=योजन.
सहस्स=हजार.
माणा=मान, प्रमाण.
मछा=मत्स्य, माछलां.
उरगा=उरःपरिसर्प.
गप्नया=गर्भज.

हुंति=छे.	पक्खिसु=पक्षीनुं.
धणुअ=धनुष्य.	भुयचारी=भुजपरिसर्प.
पुहुत्तं=पृथक्त्व,बेथी नव सुधी.	गाउअ=गाउ.

गाथा ३१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

खयरा=खेचर.	समुच्छिमा=संमूर्छिम.
भुयगा=भुजपरिसर्प.	चउप्पया=चार पगवाळा.
मित्ता=प्रमाणवाळा.	भणिया=कह्या छे.

गाथा ३२ मी पूर्वार्धना छूटा शब्दना अर्थ.

छच्चेव=निश्चे छ.	गब्भया=गर्भज.
गाउआइं=गाउ.	मुणेयवा=जाणवा.

अर्थः—तिर्यंच जीवो गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना होय छे,तेमां गर्भजना शरीरनुं प्रमाण आवी रीतेः—(मछा उरगा य सहस्स जोयण माणा के०) मत्स्य अने उरःपरिसर्पनां शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजननुं होय छे. एवां मोटां मत्स्यो स्वयंभूरमण समुद्रमां होय छे. अने एवा उरःपरिसर्पो अढी द्वीपथी बहार होय छे. (पक्खिसु धणुअ पुहुत्तं के०) पक्षीओनां शरीरनुं प्रमाण धनुष्य पृथक्त्व एटले बे धनुष्यथी लइने नव धनुष्य

सुधी होय छे, अने (भुयचारी गाउअ पुहुत्तं के०) गोधादिक भुजपरिसर्पना शरीरनुं प्रमाण गव्यूति पृथक्त्व एटले बे गाउथी मांडी नव गाउ सुधी होय. ए बधा जीवो (गब्भया हुंति के०) गर्भज छे ॥ ३० ॥

हवे संमूर्छिमनां शरीरनुं प्रमाण आवी रीतेः— (खयरा भुयगा धणुअ पुहुत्तं के०) खेचर एटले पक्षीउ अने भुजग एटले भुजपरिसर्पनां शरीरोनुं प्रमाण धनुष्य पृथक्त्व एटले बे धनुष्यथी मांडीने नव धनुष्य सुधी होय छे, तथा (उरगा य जोयण पुहुत्तं के०) उरग एटले उरःपरिसर्पनां शरीरनुं प्रमाण योजन पृथक्त्व एटले बे योजनथी मांडीने नव योजन सुधी होय छे, अने (चउप्पया गाउय पुहुत्त मित्ता के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला जीवोनां शरीरनुं प्रमाण गाउ पृथक्त्व एटले बे गाउथी मांडीने नव गाउ सुधी होय छे, एवी रीते (समुछिमा भणिया के०) संमूर्छिम तिर्यंच जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कह्युं छे. केटलांएक पुस्तकोमां "भुयगा उरगा य जोयण पुहुत्तं" एवो पाठ छे, ए प्रमाणे अर्थ करतां भुजपरिसर्पनां शरीरनुं प्रमाण योजन पृथक्त्व थाय छे ते समीचीन

नथी, केमके प्रज्ञापना तथा संग्रहिण्यादि सूत्रोथी विरूद्ध छे ॥ ३१ ॥ अने (चउप्पया गव्भया उच्चेव गाउआइं के०) गर्भज चतुष्पद जीवोनां शरीरोनुं प्रमांण उत्कृष्टथी छ गाउनुंज (मुणेयवा के०) मनाय छे. एवां मोटां शरीरना हस्तीउ देवकुर्वादिक युगलियानां क्षेत्रोमां होय छे.

हवे पंचेंद्रिय मनुष्यनां शरीरनुं प्रमाण गाथाना उत्तरार्ध वडे कहे छेः—

कोस तिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥

गाथा ३२ मी उत्तरार्धना छूटा शब्दना अर्थ.

कोस=गाउ.
तिगं=त्रण.
मणुस्सा=मनुष्य.
उक्कोस=उत्कृष्ट.
माणेणं=प्रमाण.

अर्थः—(मणुस्सा उक्कोस सरीर माणेणं के०) उत्कृष्टथी मनुष्यनां शरीरनुं प्रमाण (कोस तिगं के०) त्रण कोशनुं होय छे. ते देवकुर्वादिक क्षेत्रोना युगलिया जाणवा ॥ ३२ ॥ ए मनुष्यनां देहमान कह्यां.

हवे देवोनां स्वाभाविक शरीरोनुं प्रमाण कहे छेः-

ईसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त हुंति
उच्चत्तं ॥ दुग दुग दुग चउ गेवि,-
ज्जणुत्तरे इक्किक परिहाणी ॥ ३३ ॥

गाथा ३३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ईसाणंत=(बीजा) ईशान देवलोकना अंत सुधीना.	उच्चत्तं=उंचाइ.
सुराणं=देवताउनां.	दुग=बे.
रयणीउ=हाथ.	चउ=चार.
सत्त=सात.	गेविज्ज=(नव) ग्रैवेयक.
हुंति=होय छे.	अणुत्तरे=(पांच) अनुत्तरमां.
	इक्किक=एक एक.
	परिहाणी=उछुं करवुं.

अर्थः-(ईसाणंत सुराणं के०) बीजा ईशान देवलोकना अंत सुधी जे भवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव छे तेउनां शरीरोनी (उच्चत्तं के०) उंचाइ (सत्त रयणीउ हुंति के०) सात हाथनी होय छे. त्यारपछी "दुग दुग दुग चउ गेविज्ज-णुत्तरे इक्किक परिहाणी" अनुक्रमे एकेक हाथ

घटाफ़तां जवुं; जेमके सनत्कुमार अने माहेंद्र ए (डुग के०) ठिक एटले बन्ने देवलोकमांना देवोनां शरीरोनी ऊंचाइनुं प्रमाण ठ हाथनुं होय ठे, ब्रह्म अने लांतक ए (डुग के०) बे देवलोकमां पांच हाथ होय ठे, शुक्र अने सहस्रार ए (डुग के०) बे देवलोकमां चार हाथ होय ठे, ए त्रण ठिक कही अने आनत, प्राणत, आरण तथा अच्युत ए (चउ के०) चार देवलोकमां त्रण हाथ होय ठे, (गेविज्ज के०) नव ग्रैवेयकमां बे हाथ होय ठे, अने (अणुत्तरे के०) पांच अनुत्तरवासी देवलोकमांना देवोनां शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं होय ठे. ए रीते (इक्कि परिहाणी के०) एकेक हाथनी हाणी करतां जवुं ते वारे पूर्वोक्त मान थाय. ए सर्व जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते जाणवुं ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आउखानुं बीजुं द्वार कहे ठे.

बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स ति-
न्नि वाउस्स ॥ वास सहस्सा दस तरु,-
गणाण तेउ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

गाथा ३४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

बावीसा=बावीश.	सहस्सा=हजार.
पुढवीए=पृथ्वीकाय.	दस=दश.
सत्तय=सात.	तरु=प्रत्येक वनस्पति.
आउस्स=अप्काय.	गणाण=समूह.
तिन्नि=त्रण.	तेउ=तेउकाय.
वाउस्स=वायुकाय.	तिरित्ता=त्रण अहोरात्र.
वास=वर्ष.	आउ=आयुष्य.

अर्थः—(पुढवीए बावीसा के०) पृथ्वीकाय जीवोनुं आयु उत्कृष्टथी बावीश हजार वर्षनुं होय छे, (सत्तय आउस्स के०) अप्काय जीवोनुं आयु सात हजार वर्षनुं, (वाउस्स तिन्नि के०) वायुकाय जीवोनुं आयु त्रण हजार वर्षनुं, (तरुगणाण के०) प्रत्येक वनस्पतिसमूहनुं आयुष्य (दस सहस्सा वास के०) दश हजार वर्षनुं होय छे अने (तेउ तिरत्ताउ के०) तेजस्काय जीवोनी उत्कृष्ट आयुःस्थिति त्रण अहोरात्रनी होय छे अने ए बधा जीवोनुं जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त आयुष्य होय छे ॥ ३४ ॥

हवे विकलेंद्रिय जीवोनुं आयु कहे छे.

वासाणि बारसाउ, बिइंदियाणं ति-

इंदियाणं तु ॥ अउणापन्न दिणाइं,
चउरिंदीणं तु छम्मासं ॥ ३५ ॥

गाथा ३५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

वासाणि=वर्ष.	तु=तो.
बारस=बार.	अउणापन्न=ओगणपचास.
आऊ=आयुष्य.	दिणाइं=दिवस.
बिइंदियाणं=बेइन्द्रिय जीवोनुं.	चउरिंदीणं=चतुरिंन्द्रिय जीवोनुं.
तिइंदियाणं=तेइन्द्रिय जीवोनुं.	छम्मास=छ महीना.

अर्थः—(बिइंदियाणं बारसाऊ वासाणि के०) बेइन्द्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं आयुष्य होय छे, (तिइंदियाणं तु के०) तेइन्द्रिय जीवोनुं आयुष्य (अउणापन्न दिणाइं के०) ओगणपचास दिवसनुं होय छे अने (चउरिंदीणं तु के०) चतुरिंन्द्रिय जीवोनुं आयुष्य (छम्मासं के०) छ महीनानुं होय छे. तेमज ए सर्व जीवोनुं जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३५ ॥ ए विकलेंन्द्रियनुं आयुष्य कह्युं.

हवे पंचेंन्द्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयुःप्रमाण कहे छेः-

सुर नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि
तित्तीसं॥चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्नि-

य पलिउंवमा हुंति ॥३६॥ जलयर उर भुयगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोडीउ ॥ पक्खीणं पुण भणिउं, असंखभागो अ पलियस्स ॥ ३७ ॥

गाथा ३६ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

सुर=देवता.
नेरइयाण=नारकी.
ठिई=स्थिति.
उक्कोसा=उत्कृष्टथी.
सागराणि=सागरोपम.
तित्तीसं=तेत्रीश.
चउपय=चार पगवाला.
तिरिय=तिर्यंच.
मणुस्सा=मनुष्य.
तिन्निय=त्रण.
पलिउंवमा=पल्योपम.
हुंति=होय छे.

गाथा ३७ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

जलयर=जलचर.
उर=उदरथी चालनारा.
भुयगाणं=भुजाथी चालनारा.
परमाऊ=उत्कृष्ट आयुष्य.
होइ=होय छे.
पुव्वकोडीउं=पूर्व कोडी.
पक्खीणं=पक्षीउनुं.
पुण=तेवी रीते, वली.
भणिउं=कहेलुं छे.
असंखभागो=असंख्यातमो भाग.
पलियस्स=पल्योपमनो.

अर्थः-(सुर नेरइयाण ठिई के०) देव अने नारकीउना आयुष्यनी स्थिति (उक्कोसा के०)

उत्कृष्टथी (तित्तीसं सागराणि के०) तेत्रीश साग-रोपमनी होय छे. एटलुं आयुष्य पांच अनुत्तर विमानोना देवोनुं तथा सातमी नरकना जीवोनुं उत्कृष्टथी जाणी लेवुं अने (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला (तिरिय के०) तिर्यंच जीवोनुं तथा (मणुस्सा के०) सर्व प्रकारना माणसोनुं उत्कृष्टथी (तिन्निय पलिउवमा के०) त्रण पल्योपमनुं आयुष्य (हुंति के०) होय छे. एवा आयुष्यवाला जीवो देवकुर्वादिक क्षेत्रोमां होय छे. अहीं पल्योपम तथा सागरोपमने विषे सूक्ष्मताथी अथवा विशेषण विशिष्टनुं ग्रहण कर्याथी देव तथा नारकीउनुं जघन्यथी आयुष्य दश हजार वर्षनुं होय छे, अने मनुष्य तथा तिर्यंच जीवोनुं जघन्यथी पूर्वनी पेठे अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३६ ॥

गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना (जलयर के०) जे जलचर जीवो छे, (उर के०) उदरथी चालनारा जे सर्पो छे, (भुयगाणं के०) भुजाथी चालनारा जे नोलिया प्रमुख जीवो छे, तेउनुं (परमाऊ के०) उत्कृष्टथी आयुष्य (पुव्वकोडीउ के०) पूर्व

कोमीनुं (होइ के०) होय छे. सित्तेर लाख अने छप्पन हजार कोटि वर्षनो एक पूर्व थाय छे. एवा एक कोटि पूर्वनुं आयुष्य जाणवुं. (पक्कीणं के०) पक्षीउंनुं (पुण के०) तेवी रीतेज (पलि-यस्स असंखन्नागो अ के०) पल्योपमना असंख्या-तमा नाग जेटलुं आयुष्य (नणिउं के०) कहेलुं छे. आ गर्नज तिर्यंचनुं आयुष्य जाणवुं. आ प्रक-रणमां संमूर्छिम स्थलचर तथा खेचरादि पंचेंद्रियोनुं उत्कृष्टथी आयु कह्युं नथी, पण बीजा ग्रंथोमां कहेलुं छे, ते आ प्रमाणेः—'समुच्छि पणिंदि थलयर, खयर उरग नुयग जिठ्ठ ठिइ कमसो; वास सह-स्साचुलसी, बिसत्तरी तिपन्न बायाला ॥१॥' इति ॥३७॥

हवे सूक्ष्मादि जीवोना आयुष्यनुं प्रमाण कहे छेः—

सवे सुहुमा साहा,—रणा य समुच्छि-
मा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं,
अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥

गाथा ३८ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

सवे=सर्वे.
सुहुमा=सूक्ष्म.
साहारणा=साधारण.
समुच्छिमा=संमूर्छिम.

मणुस्सा=मनुष्य.
जहन्नेणं=जघन्यथी.
अंतमुहुत्तं=अंतर्मुहूर्त्त.
चिय=मात्र.
जियंति=जीवे छे.

अर्थः—(सव्वे के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउ-काय, वायुकाय तथा वनस्पतिकाय, ए सर्वे (सुहुमा साहारणा य के०) सूक्ष्म तथा बीजा साधारण एटले बादर निगोदरूप जे अनंतकाय जीवो छे ते अने (समुछिमा मणुस्सा य के०) संमूर्छिम मनुष्यो जे एकसो ने एक क्षेत्रोने विषे उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्योनांज मल मूत्र तथा वातादिकने विषे उत्पन्न थाय छे ते बधा (उक्कोस के०) उत्कृष्टथी तथा (जहन्नेणं के०) जघन्यथी (अंतमुहुत्तं चिय के०) एक अंतर्मुहूर्त्त मात्रज (जियंति के०) जीवे छे ॥ ३० ॥

उपलां बे द्वारमां जे कह्युं ते गाथा वडे सूचवे छेः—

उगाहणाउ माणं, एवं संखेवउ सम-क्खायं ॥ जे पुण इछ विसेसा, विसेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३१ ॥

गाथा ३ए मीना बूटा शब्दना अर्थ.

उगाहणा=अवगाहना.
आउ=आयुष्य.
माणं=प्रमाण.
एवं=एवी रीते.
संखेवउ=संक्षेपे करी.
समरकायं=कह्युं.

जे=जे.
पुण=वली.
इह=अहीं.
विसेसा=विशेष.
सुत्ताउ=सूत्रोथी.
ते=ते.
नेया=जाणी लेवा.

अर्थः—(उगाहणाउ माणं के०) जेने विषे जीवनी स्थिति होय छे, जेमां जीव रहे छे तेने अवगाहना कहीए, एवुं जे प्रत्येक जीवनुं शरीर तेना आयुष्यनुं प्रमाण (एवं के०) एवी रीते (संखेवउ के०) संक्षेपे करी (समरकायं के०) समाख्यातं एटले कह्युं, परंतु (जे पुण इह के०) अत्रे वली जे कांइ देवलोकादिकने विषे प्रतरादि आश्रित (विसेसा के०) विशेष अवगाहना तथा आयुना भेद छे (ते विसेस सुत्ताउ के०) ते विशेष सूत्र जे संग्रहिणी तथा प्रज्ञापनादिक सूत्रो छे ते थकी (नेया के०) जाणी लेवा ॥ ३ए ॥ ए रीते अवगाहना तथा आयुःस्थिति मली बे द्वार कह्यां.

हवे त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कहे छेः—

एगिंदिया य सव्वे, असंख उस्सप्पिणी सकायंमि ॥ उववज्जंति चयंति अ, अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥

गाथा ४० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उस्सप्पिणी=उत्सर्पिणी.
सकायंमि=पोतानी कायाने विषे.
उववज्जंति=उपजे छे.
चयंति=च्यवे छे.
अणंताउ=अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी.

अर्थः—(सव्वे एगिंदिया य के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय, ए जे पांच स्थावर एकेंद्रिय छे ते सर्व (असंख उस्सप्पिणी के०) असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी सुधी (सकायंसि के०) तेज पोतानी कायने विषे (उववज्जंति के०) उत्पन्न थाय छे, अने (चयंति अ के०)मरणने पामे छे. अर्थात् तेज कायमां उत्पन्न थइने फरी त्यांज नाश पामे छे, तथा (अणंतकाया के०) अनंतकाय वनस्पति जीवो जे छे ते (अणंताउ के०) अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी यावत् स्वकायमां उत्पन्न थइने तेज कायमां नाश पामे छे ॥४०॥ एवी रीते एकेंद्रिय जीवोनी कायस्थिति कही.

हवे बेइंद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छेः—

संखिज्ज समा विगला, सत्तठ भवा पणिंदि तिरि मणुया ॥ उववज्जंति सकाए, नारय देवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

गाथा ४१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संखिज्जसमा=संख्यातां वर्ष सुधी	मणुया=मनुष्य.
विगला=विकलेंद्रिय जीवो.	सकाए=पोतानी कायाने विषे.
सत्तठ=सात अथवा आठ.	नारय=नारकीना जीवो.
भवा=भव.	देवा=देवो.
पणिंदि=पंचेंद्रिय.	नो=नहि; नथी.
तिरि=तिर्यंच.	चेव=निश्चे.

अर्थः—(विगला संखिज्ज समा के०) बेइंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जीवो छे ते संख्यातां वर्ष सुधी (उववज्जंति सकाए के०) उपपद्यंति स्वकाये एटले स्वकायने विषे उत्पन्न थाय अने च्यवे छे तथा (पणिंदि तिरि मणुया के०) पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जीवो ते तेवाज भवपणे केम्रावेडे (सत्तठ भवा के०) सात अथवा आठ भव करे छे. साते भव तो उत्कृष्ट संख्यातां वर्ष सुधीमां थइ शके छे अने

उत्कृष्ट असंख्यातां वर्ष सुधीमां आठ नव थइ शके छे. एटले आठ नवमां पूर्व कोटी पृथक्त्व अने त्रण पल्योपम अधिक काल जाणी लेवो अने जघन्यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी लेवी. तथा (नारय देवा अ नो चेव के०) नारकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज गतिमां उत्पन्न थता नथी एटले नारकी मरी फरी नारकीमां न उपजे अने देवता मरी फरी देवतामां न उपजे. अवश्य एक बे नव बीजी गतिमां करीने पछी ते गतिमां उपजे, तेम वली देवता मरी नरकमां पण न जाय अने नारकी मरी देवतामां पण न जाय. ए त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कह्युं ॥ १ ॥

हवे चोथुं प्राण द्वार कहे छेः—

दसहा जियाण पाणा, इंदि उसासाउ
जोगबलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो,
विगलेसु छ सत्त अठेव ॥ ४२ ॥
असन्नि सन्नि पंचिं,—दिएसु नव दस
कमेण बोधवा ॥ तेहिं सह विप्पओगो,
जीवाणं जणए मरणं ॥ ४३ ॥

गाथा ४२ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.
जियाण=जीवना.
पाणा=प्राण.
इंदि=इन्द्रियो.
उसास=श्वासोश्वास.
आउ=आयुष्य.
जोग=योग.

बलरुवा=बलरूप.
एगिंदिएसु=एकेंद्रियने विषे.
चउरो=चार.
विगलेसु=विकलेंद्रियने विषे.
सत्त=सात.
अट्ठेव=आठ.

गाथा ४३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

असन्नि=असंज्ञी.
सन्नि=संज्ञी.
पंचिंदिएसु=पंचेंद्रियने विषे.
नव=नव.
दस=दश.
कमेण=क्रमे करी.
बोधव्वा=जाणवा.

तेहिं=तेनी.
सह=साथे.
विप्पओगो=वियोग.
जीवाणं=जीवने.
भणए=कहेवाय छे.
मरणं=मरण.

अर्थः—(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना दश प्रकारना प्राण होय छे, ते कहे छे, (इंदि के०) इंद्रियो (उसास के०) श्वासोश्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगबलरूवा के०) योगनां बलरूप जाणवा. एटले स्पर्शनादि पांच इंद्रियो, छठो उश्वास निःश्वास,

सातमुं आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण योगनां त्रण बल मली दश प्राण छे. तेमां (एगिंदिएसु के०) एकेंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु तथा कायबल, ए (चउरो के०) चार प्राण होय छे, अने (विगलेसु के०) विकलेंद्रिय एटले द्वींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण होय छे. त्रींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे. चतुरिंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (अठ्ठेव के०) आठ प्राण होय छे ॥ ४२ ॥

(असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु के०) असंज्ञी पंचेंद्रिय तथा संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने (नव दस के०) नव अने दश (कमेण के०) क्रमे करी बोधव्वा के०) जाणवा. एटले असंज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने एक मनोबल होतुं नथी, बाकीना नवे प्राणो होय छे अने संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने दशे प्राणो होय छे. ए प्राण जेने जेटला कह्या छे ते जीवने (तेहिं

सह विप्पओगो के०) ते प्राणोनो जे वियोग थाय छे ते (जीवाणं मरणं नणए के०) जीवने मरण कहेवाय छे. वली ज्यां उपजे त्यां एक आयु तो पूर्वला नवनुं बांधेलुं होय, बाकी बीजा सर्वे नवा प्राण अने नवी पर्याप्ति उपजती वेलाए बांधे. इहां देव, नारकी, गर्नज तिर्यंच तथा मनुष्य ए जीवो संज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय छे; अने संमूर्छिम तिर्यग् तथा संमूर्छिम मनुष्य असंज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय छे. तेउमां संमूर्छिम मनुष्यो तो नाषारूप वाग्वलादिके करी रहित होवाथी तेउ सात तथा आठ प्राणवाला कह्या छे ॥ ४३ ॥

अहीं एवी आशंका उत्पन्न थाय छे के जीवने प्राण वियोगरूप जे मरण कह्युं ते केटला काल सुधी थया करे छे ? एना निरासार्थे उत्तर कहे छेः—

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि
नीमंमि ॥ पत्तो अणंत खुत्तो, जीवेहिं
अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

गाथा ४४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एवं=ए प्रकारे.	संसारे=संसाररूप.
अणोरपारे=पारावार रहित.	सायरंमि=समुद्रने विषे.

नीमंमि=महा नयंकर.	जीवेहिं=जीवोने.
पत्तो=प्राप्त थाय ले.	अपत्त=नहीं पामेला.
अणंत=अनंती.	धम्मेहिं=धर्मने.
खुत्तो=वार.	

अर्थः—(अपत्तधम्मेहिं के०) जेउने धर्मनी प्राप्ति थइ नथी एवा (जीवेहिं के०) जीवोने (एवं के०) पूर्वे कही आव्या तेम आ (अणोरपारे के०) पारावार रहित एटले जेनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी एवा (नीमंमि के०) महा नयंकर (संसारे सायरंमि के०) संसाररूप समुड्रने विषे (अणंत खुत्तो के०) अनंती वार प्राणवियोगरूप मरण (पत्तो के०) प्राप्त थाय ले ॥ ४४ ॥ ए चोथुं प्राण द्वार कह्युं.

एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या ते जीव एकेकी योनिने विषे अनंती अनंती वार मरण जीवन प्रत्ये करे ले. योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस, एक स्पर्श, एटलां वानां सरखां बरोबर होय ते सर्व जीवनी एक योनि कहीए. ते योनिउ केटली ले ते सर्व जातिना जीवोनी जूदी जूदी संख्याए आगली गाथाए कहे ले.

हवे पांचमुं योनि द्वार कहे छेः—

तह चउरासी लक्खा, संखा जोणीण हो-
इ जीवाणं ॥ पुढवाईण चउण्हं, पत्तेयं
सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं,
चउदस लक्का हवंति इयरेसु ॥ विगलें-
दिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं
॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणु-
आण चउदस हवंति ॥ संपिंडिया य
सव्वे, चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥

गाथा ४५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

तह=तथा.
चउरासी=चोराशी.
लक्का=लाख.
संखा=संख्या.
जोणीण=योनिनी.
होइ=छे.
जीवाणं=जीवोनी.
पुढवाईणं=पृथ्व्यादिकनी.
चउण्हं=चारनी.
पत्तेयं=प्रत्येकनी.
सत्त सत्तेव=सात सात.

गाथा ४६ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

दस=दश.
पत्तेय तरूणं=प्रत्येक वनस्पति-कायनी.
चउदस=चौद.
लक्का=लाख.
हवंति=छे.

इयरेसु=इतर (साधारणने विषे).	चउरो=चार.
विगलेंदिएसु=विकलेंद्रियने विषे.	पंचिंदि=पंचेंद्रिय.
दो दो=बे बे.	तिरियाणं=तिर्यंचनी.

गाथा ४७ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

चउरो=चार.	संपिंडिया=एकठी करतां
नारय=नारकीनी.	सव्वे=सर्वे.
सुरेसु=देवताउनी.	चुलसी=चोराशी.
मणुआण=मनुष्यनी.	लरकाउ=लाख.
चउदस=चौद.	जोणीणं=योनिउ.

अर्थः—(तह के०) तथा (जीवाणं के०) जीवोनी (जोणीण के०) योनिनी (संखा के०) संख्या (चउरासी लरका के०) चोराशी लक्ष (होइ के०) छे. जीवोनुं जे उत्पत्तिस्थानक ते योनि कहेवाय छे. तेउंमां (पुढवाईण चउण्हं के०) पृथ्व्यादिक चार एटले पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय, ए चार प्रकारना जीवोनी (पत्तेयं के०) प्रत्येकनी (सत्त सत्तेव के०) सात सात लाख योनिउ जाणवी. एम चारेनी सर्वे मली अठ्यावीश लक्ष योनिउ थइ ॥ ४५ ॥ (पत्तेय तरूणं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोनी (दस के०) दश लक्ष योनिउ छे. (इयरेसु के०) इतरेषु एटले

एथी इतर जे साधारण वनस्पतिकाय जीवो छे तेनी (चउदस लक्खा के०) चौद लक्ष योनिउं (हवंति के०) छे. (विगलेंदिएसु दो दो के०) विकलेंद्रिय एटले बेइंद्रिय जीवोनी बे लाख, तेइंद्रिय जीवोनी बे लाख तथा चौरिंद्रिय जीवोनी बे लाख योनिउं जाणवी; अने (पंचिंदि तिरियाणं के०) पंचेंद्रिय तिर्यक् जीवोनी (चउरो के०) चार लक्ष योनिउं छे ॥ ४६ ॥ (चउरो नारय के०) नारकी जीवोनी चार लक्ष योनिउं छे, (सुरेसु चउरो के०) देवोनी पण चार लक्ष योनिउं छे, (मणुआण के०) मनुष्य प्राणीउंनी (चउदस हवंति के०) चौद लाख योनिउं छे. एवी रीते (संपिंडिया य के०) बधीने एकठी करतां सरवाळे (सव्वे के०) सर्व (चुलसी के०) चोराशी (लक्खाउ के०) लाख (जोणीणं के०) योनिउं थाय छे ॥ ४७ ॥

एवी रीते संसारी जीवो विषयक शरीरनुं मान, आउखानी स्थिति, कायस्थिति, प्राण अने योनि ए पांच द्वार कह्यां.

हवे सिद्ध जीवो विषयक कहे छेः—

सिध्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं

न पाण जोणीउ ॥ साइ अणंता तेसिं,
ठिई जिणंदाऽऽगमे जणिया ॥ ४७ ॥

गाथा ४७ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

सिद्धाण=सिद्धने.
नत्थि=नथी.
देहो=शरीर, देह.
न=नथी.
आउ=आयु.
कम्मं=कर्म.
पाण=प्राण.
जोणीउ=योनि.
साइ=सादि.
अणंता=अनंत.
तेसिं=तेमनी.
ठिई=स्थिति.
जिणंदाऽऽगमे=जिनेंद्र प्रणीत सिद्धांतने विषे.
जणिया=कही छे.

अर्थः—(सिद्धाण देहो नत्थि के०) सिद्ध परमात्माने शरीर नथी, माटे (न आउ कम्मं के०) आयु अने कर्म पण नथी; अने ज्यां आयु न होय त्यां (पाण जोणीउ न के०) प्राण अने योनि पण नथी. ए सर्वनो अजाव होवाथी कायस्थित्यादिकनो पण अजाव दर्शाव्यो. एम सर्व कर्मोपाधिविमुक्त अने जेउ लोकना अग्र जागने विषे स्थित छे (तेसिं के०) ते सिद्ध जीवोनी (साइ अणंता ठिई के०) सादि अनंत स्थिति, ते (जिणंदाऽऽगमे

के०) जिनेंद्र प्रणीत सिद्धांतोने विषे (नणिया के०) कही छे. एटले जे दिवसे अहींथी सिद्धमां गमन थाय ते दिवसे सिद्धने सादिपणुं कह्युं छे, अने फरी त्यांथी च्यवननो अभाव होवाथी अनंतपणुं छे ॥ ४७ ॥

हवे फरी संसारी जीव विषे कहे छेः—

काले अणाइनिहणे, जोणी गहणंमि भीसणे इछ ॥ भमिया भमिहंति चिरं, जीवा जिणवयणमलहंता ॥ ४ए ॥

गाथा ४ए मीना बूटा शब्दना अर्थ.

काले=कालने विषे.	इछ=अहींआं,आ संसारने विषे.
अणाइनिहणे=अनादिनिधन (आदि अने अंत रहित).	भमिया=भटकेला छे.
जोणी=योनि.	भमिहंति=भमशे.
गहणंमि=गहन दुःख देनारो.	चिरं=लांबा काल सुधी.
भीसणे=भयने देनारो.	जिणवयणं=जिनवचनने.
	अलहंता=नहीं पामेला.

अर्थः—आदि एटले प्रारंभ, निधन एटले नाश बन्ने शब्दो विभक्ति विनाना होवाथी तेउनुं एक अन्वयित पद "आदिनिधन" एम थाय छे. ए पदनो अर्थ वृत्तिकार आम करे छेः—जेनो प्रारंभ अने नाश दीठामां आवतो नथी तेने अनादिनिधन कहीए. ए

(अणाइनिहणे काले के०) अनादि अनंत कालने विषे (जिणवयणमलहंता जीवा के०) हितोपदेशरूप जिनवचनने जे जीवो पाम्या नथी तेउ (जोणी के०) चोराशी लाख संख्यावाली जे योनि तेणे करी (गहणंमि के०) महा गहन दुःख देनारो तथा (नीसणे के०) नयने देनारो (इब के०) इहां वर्णव्यो एवो जे आ संसार तेने विषे (नमिया के०) अतीत कालने विषे नटकेला बे, अने फरी (नमिहंति चिरं के०) आगल आगामिक कालमां पण घणुं भ्रमण करशे ॥ ४ए ॥

हवे ग्रंथकार पोताना नामनी सूचना करता बता धर्मोपदेश कहे बेः—

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ॥ सिरि संति सूरि सिठे, करेह नो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

गाथा ५० मीना बूटा शब्दना अर्थ.

ता=ते कारण माटे.
संपइ=सांप्रत काले.
संपत्ते=प्राप्त थयुं.
मणुअत्ते=मनुष्यपणुं.
दुल्लहे=दुर्लन.
वि=पण.
सम्मत्ते=सम्यक्त्व.
सिरि=श्री, ज्ञानादि लक्ष्मी.
संति=शांति, रागादिकनो उपशम.
सूरि=सूरि, पूजवायोग्य.
सिठे=शिष्ट, उपदेश करेला.

करेह=करो. | उज्जमं=उद्यम.
भो=हे भव्यजीवो. | धम्मे=धर्मने विषे.

अर्थः-(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (भो के०) हे भव्यजीवो !(संपइ के०) सांप्रत आ समयने विषे दश दृष्टांते करी (दुल्लहे के०) दुर्लभ एवुं जे आ (मणुअत्ते के०) मनुष्यपणुं ते (संपत्ते के०) प्राप्त थयुं उतां अने (वि सम्मत्ते के०) तेमां पण दुर्लभ जिनोक्त तत्त्वत्रयरुचिरूप सम्यक्त्व प्राप्त थयुं उतां (सिरि संति सूरि सिठे के०) श्री एटले ज्ञानादि लक्ष्मी, शांति एटले रागादिकनो उपशम, एउंए करी जे सूरि एटले पूज्य एवा श्री तीर्थंकर तथा गणधर तेउं शिष्टे करेला उपदेशरूप (धम्मे उज्जमं करेह के०) धर्मने विषे उद्यम करो ॥ ५० ॥ आ पद्यमां कविए पोतानुं नाम सूचव्युं छे ते आवी रीतेः-श्री शांति सूरि उपदेश करे छे के शिष्टे एटले उत्तम पुरुषोए आचरण करेला धर्मने विषे उद्यम करो. एवो अन्वय करवो. अथवा श्री शांति सूरिए करेला भगवद्वचनानुसारे धर्मोपदेशनो उद्यम करो. हवे आ ग्रंथ सिद्धांतमांथी कहाडेलो छे एम कहे छेः-

एसो जीववियारो, संखेवरुईण जा-

णाणा हेउं ॥ संखित्तो उध्धरिओ, रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥ इति ॥

गाथा ५१ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

एसो=ए.
जीवविचारो=जीवविचार.
संखेवरुईण=संक्षेपरुचिवंतने.
जाणणा हेउं=जाणवाने अर्थे.
संखित्तो=संक्षेपथी.
उध्धरिओ=उध्धार कर्यो छे.
रुद्दाओ=अतिशय विस्तारवाला.
सुयसमुद्दाओ=श्रुतसमुद्रथी.

अर्थः—(एसो के०) ए जे (जीवविचारो के०) जीवविचार कह्यो ते (संखेवरुईण के०) संक्षेपरुचि एटले स्वल्प मतिवाला जीवोने (जाणणा हेउं के०) जाणवाने अर्थे (रुद्दाओ के०) जेना विस्तारनुं ग्रहण थइ शके नहीं एवा (सुयसमुद्दाओ के०) श्रुतसमुद्र थकी (संखित्तो उध्धरिओ के०) संक्षेपथी उध्धार करीने आ निबंध कर्यो छे. एथी आ सर्व जे कांइ कह्युं ते पोतानुं मनःकल्पित कह्युं नथी; परंतु सिद्धांतोमांथी उध्धार करीने कह्युं छे, एवी सूचना करी॥५१॥

इति श्रीजीवविचारप्रकरणं प्राकृतव्याख्यासहितं संपूर्णम् ॥

॥ जीवविचारनुं स्वरूप लिख्यते ॥

॥ जीवना बे भेद ॥

१ संसारी जीव.

२ सिद्धना जीव.

॥ संसारीना बे भेद ॥

१ त्रस जीव.

२ स्थावर जीव.

॥ त्रसना चार भेद ॥

१ बेइंद्रिय जीव.

२ तेइंद्रिय जीव.

३ चौरिंद्रिय जीव.

४ पंचेंद्रिय जीव.

॥ स्थावरना पांच भेद ॥

१ पृथ्वीकाय जीव.

२ अप्काय जीव.

३ तेउकाय जीव.

४ वाउकाय जीव.

५ वनस्पतिकाय जीव.

१ ॥ पृथ्वीकायना भेद कहे छे ॥

स्फटिक रत्न, मणि, रत्न, परवालां, हींगलो, हरताल, मणसिल, पारो, सोनुं आदि देइ सात धातु ते सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, सीसुं, जसत, कथीर तथा लोढुं ७, खडीमाटी, हरमजी, पाषाणना कटकानी साथे मळेली धोळी माटी, पलेवो पाषाण, अबरख, तुरी

माटी, खारो, माटीनी जात, पाषाणनी जात आदि देइ पृथ्वीकायना भेद जाणवा. १

२ ॥ अप्कायना भेद कहे छे ॥

भूमिनुं पाणी, वरसादनुं पाणी, ठारनुं पाणी, हिमनुं पाणी, करानुं पाणी, लीली हरिकायनुं पाणी, घनोदधिनुं पाणी आदि देइ अप्कायना भेद जाणवा. २

३ ॥ तेउकायना भेद कहे छे ॥

अंगारानो अग्नि, ज्वालानो अग्नि, भाठानो अग्नि, उल्कापातनो अग्नि, वज्रनो अग्नि, विजलीनो अग्नि आदि देइ तेउकायना भेद जाणवा. ३

४ ॥ वाउकायना भेद कहे छे ॥

उद्भ्रामक वायरो, उत्कलिक वायरो, मंडलिक वायरो, मोटो वायरो, शुद्ध वायरो, गुंजारव करे ते वायरो, घनवात, तनुवात आदि देइ वाउकायना भेद जाणवा. ४

५ ॥ वनस्पतिकायना बे भेद कहे छे ॥

१ साधारण वनस्पति. २ प्रत्येक वनस्पति.

१ ॥ साधारण वनस्पतिना भेद कहे छे ॥

सर्व जातनां कंद, सर्व जातना अंकुरा, सर्व जातनां

कुंपल, पांच जातनी फुगी, सेवाल, भूमिफोमा, लीलुं आदु, लीली हलदर ने लीलो कचुरो, गाजर, मोथ, वथुलानी भाजी, थेग, सर्व जातना पाला, कोमल फल, सर्वे गुप्त छे सिरा, सांध, पर्व जेनां एवां, थुहर, कुंवार, गुगल, गलो प्रमुख छेद्या थकी उगे तेने साधारण वनस्पति कहीए.

२ ॥ प्रत्येक वनस्पतिना भेद कहे छे ॥

एक शरीरमां एक जीव होय जेने विषे तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ते फल, फूल, छाल, काष्ठ, मूल, पान ने वीज ए सात स्थानके एक एक जीव होय तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ए पांच स्थावरना भेद कह्या.

॥ बेइंद्रियना भेद कहे छे ॥

शंख, कोमीउं, गंडोला, जलो, चंदनक एटले स्थापनाचार्य, अलसीआ, लालीआ, लाकमाना कीमा, कीरमीआ, पूरा ए आदि देइ बेइंद्रिय जीव जाणवा.

॥ तेइंद्रियना भेद कहे छे ॥

कानखजुरा, मांकण, जु, कीमी, उदेइ, मंकोमा, इल, घीमेल, सावा, गींगोमा, गधइआ, छाणना कीमा, विष्ठाना कीमा, धनेरीआ, कुंथुआ, गोपालीक, मेहना मामा आदि देइ तेइंद्रियना भेद जाणवा.

॥ चौरिंद्रियना भेद कहे छे ॥

विछु, ढिंकुण, भमरा, भमरी, तिड, माखी, डांस, मछर, कंसारी, करोलीआ आदि देइ चौरिंद्रियना भेद जाणवा.

॥ पंचेंद्रियना चार भेद कहे छे ॥

१ नारकी. २ तिर्यंच. ३ मनुष्य. ४ देवता.

॥ नारकीना सात भेद ॥

गोत्रनां नाम.	नारकीनां नाम.
रत्नप्रभा.	घमा.
शर्कराप्रभा.	वंसा.
वालुकाप्रभा.	सेला.
पंकप्रभा.	अंजणा.
धूमप्रभा.	रिठा.
तमःप्रभा.	मघा.
तमस्तमःप्रभा.	माघवती.

॥ तिर्यंचना त्रण भेद ॥

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर.

१ ॥ जलचरना पांच भेद कहे छे ॥

१ सुसुमार. २ मछ. ३ काचबा. ४ जलतंतु. ५ मगरमछ.

२ ॥ स्थलचरना त्रण भेद ॥

उरःपरिसर्प. सर्पनी जाति.

भुजपरिसर्प. नोलिया, उंदर प्रमुख.

चतुष्पद. गाय, भेंस प्रमुख.

३ ॥ खेचरना बे भेद ॥

रोमज पंखी, चर्मज पंखी, मनुष्यलोकथी बहार समुद्ग पंखी ने वितत पंखी.

मनुष्यनी मुख्य त्रण जाति छे. तेनी उत्तर जाति १०१ मनुष्यक्षेत्र जाणवां.

१५ पंदर कर्मभूमि. ३० त्रीश अकर्मभूमि. ५६ छप्पन अंतरद्वीप.

॥ हवे पंदर कर्मभूमि कहे छे ॥

पांच भरत. पांच ऐरवत. पांच महाविदेह.

॥ हवे त्रीश अकर्मभूमि कहे छे ॥

१ पांच हेमवंत क्षेत्र. २ पांच हिरण्यवंत क्षेत्र. ३ पांच हरिवर्ष क्षेत्र. ४ पांच रम्यक क्षेत्र, ५ पांच देवकुरु क्षेत्र. ६ पांच उत्तरकुरु क्षेत्र.

॥ हवे छप्पन अंतरद्वीप कहे छे ॥

चुलहेमवंत पर्वत अने शिखरी पर्वत, ए बे पर्व-

तनी पूर्वे ने पश्चिमे लवण समुद्रमां बे बे दाढाउं नीकली छे; एटले बंने पर्वतनी बंने दिशिनी आठ दाढाउं थइ. ते एक एक दाढा उपरे सात सात द्वीप छे एटले आठ दाढा उपर छप्पन अंतरद्वीप थया.

ए प्रमाणे मनुष्यना १०१ भेद जाणवा.

॥ देवताना चार भेद कहे छे ॥

१ दश भवनपति. २ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतर. ३ पांच ज्योतिषी. ४ बे वैमानिक.

॥ दश भवनपतिनां नाम कहे छे ॥

१ असुरकुमार. २ नागकुमार. ३ सुवर्णकुमार. ४ विद्युत्कुमार. ५ अग्निकुमार. ६ द्वीपकुमार. ७ उदधिकुमार. ८ दिशिकुमार. ९ वायुकुमार. १० स्तनितकुमार.

॥ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतरना भेद कहे छे ॥

१ पिशाच. २ भूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किंनर ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

१ अणपन्नी. २ पणपन्नी. ३ इसीवादी. ४ भूतवादी. ५ कंदित. ६ महाकंदित. ७ कोहंड. ८ पतंग.

॥ ज्योतिषीना पांच भेद कहे छे ॥

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

॥ वैमानिकना बे नेद कहे छे ॥

१ कल्प ते बार देवलोक. २ कल्पातीत ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान.

॥ कल्प ते बार देवलोकनां नाम कहे छे ॥

१ सौधर्म. २ ईशान. ३ सनत्कुमार. ४ माहेंद्र. ५ ब्रह्म. ६ लांतक. ७ शुक्र. ८ सहस्रार. ९ आनत. १० प्राणत. ११ आरण. १२ अच्युत.

॥ कल्पातीत ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान ॥

॥ नव ग्रैवेयकनां नाम कहे छे ॥

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबंध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोनद्र. ५ विशाल. ६ सुमनस. ७ सौमनस. ८ प्रीतिकर. ९ आदित्य.

॥ पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे छे ॥

१ विजय. २ वैजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

॥ ए संसारी जीवोना नेद कह्या ॥

॥ हवे सिद्धना पंदर नेद कहे छे ॥

तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि देइ सिद्धना पंदर नेद जाणवा.

ए जीवनुं स्वरूप कह्युं.

॥ हवे पांच द्वारनां नाम कहे छे ॥

१ शरीरनुं द्वार. २ आउखानी स्थितिनुं द्वार. ३ पोतानी कायमां रहे तेनुं द्वार. ४ प्राणनुं द्वार. ५ योनिनुं द्वार.

१ ॥ हवे शरीरनुं द्वार कहे छे ॥

सर्व एकेंद्रियनुं अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर होय, पण प्रत्येक वनस्पतिनुं हजार योजनथी अधिक शरीर जाणवुं.

बेइंद्रियनुं बार योजननुं शरीर, तेइंद्रियनुं त्रण गाउनुं शरीर, चौरिंद्रियनुं एक योजननुं शरीर.

पांचसो धनुष्यनुं शरीर सातमी नारकीनुं, पछी अर्ध अर्ध उंचुं करीए त्यारे पहेली नारकीनुं पोणा आठ धनुष्य ने छ आंगलनुं शरीर जाणवुं.

गर्भज मछ ने उरःपरिसर्पनुं हजार योजननुं शरीर जाणवुं.

पक्षीनुं धनुष्य पृथक्त्व एटले बेथी नव धनुष्यनुं शरीर जाणवुं.

भुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व शरीर होय.

॥ ए शरीरनुं मान गर्भजनुं जाणवुं ॥

॥ संमूर्छिमनुं शरीरमान कहे छे ॥

खेचर पंखीनुं तथा भुजपरिसर्पनुं धनुष्य पृथक्त्व शरीर जाणवुं.

उरःपरिसर्पनुं योजन पृथक्त्व शरीर जाणवुं. संमूर्छिम चतुष्पदनुं गाउ पृथक्त्व शरीरमान जाणवुं.

॥ गर्भज ॥

चतुष्पदनुं छ गाउनुं शरीर होय.

मनुष्यनुं त्रण गाउनुं शरीर होय.

भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकमां सौधर्म ने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवतानुं सात हाथनुं शरीर जाणवुं.

त्रीजे चोथे छ हाथनुं शरीर.

पांचमे छठे पांच हाथनुं शरीर.

सातमे आठमे चार हाथ; नवमे, दशमे, अग्यारमे, बारमे ए चार देवलोके त्रण हाथनुं शरीर, नव ग्रैवेयके बे हाथनुं शरीर. पांच अनुत्तर विमाने एक हाथनुं. ए शरीरनुं मान जाणवुं.

२ ॥ आउखानुं मान कहे छे ॥

पृथ्वीकायनुं बावीश हजार वर्ष, अप्कायनुं सात

हजार वर्ष, तेउकायनुं त्रण अहोरात्रि, वाउकायनुं त्रण हजार वर्ष अने वनस्पतिनुं दश हजार वर्षनुं आउखुं जाणवुं.

बेइंद्रियनुं बार वर्ष.

तेइंद्रियनुं उगणपचास दिवस.

चौरिंद्रियनुं छ मासनुं.

देवता अने नारकीनुं तेत्रीश सागरोपम, चतुष्पद, तिर्यंच अने मनुष्यनुं त्रण पल्योपमनुं आउखुं.

जलचर, उरःपरिसर्प, भुजपरिसर्प एउनुं उत्कृष्ट पूर्व कोमीनुं आउखुं जाणवुं.

पक्षीनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं आयुष्य जाणवुं.

सर्व सूक्ष्म तथा साधारण वनस्पति अने संमूर्छिम मनुष्य एउनुं जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनुं आउखुं होय.

॥ हवे संमूर्छिमनुं आयुष्य कहे छे ॥

जलचर संमूर्छिमनुं पूर्व क्रोम वर्ष, स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्ष, खेचरनुं बहोंतेर हजार वर्षनुं आयुष्य, उरःपरिसर्पनुं त्रेपन हजार वर्षनुं आयुष्य,

जुजपरिसर्पनुं बेंतालीश हजार वर्षनुं आयुष्य. एवी रीते आयुष्यनुं मान जाणवुं.

३ ॥ हवे कायनी स्थितिनुं द्वार कहे छे ॥

एकेंद्रिय असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

अनंतकाय अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

बेइंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए त्रणे विकलेंद्रिय संख्यातां वर्ष सुधी रहे.

मनुष्य तथा तिर्यंच सात आठ जव सुधी रहे.

नारकी मरी नारकी न थाय.

देवता मरी देवता न थाय.

४ ॥ हवे दश प्राणनुं द्वार कहे छे ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय.	६ श्वासोश्वास.
२ रसनेंद्रिय.	७ आउखुं.
३ घ्राणेंद्रिय.	८ मनबल.
४ चक्षुरिंद्रिय.	ए वचनबल.
५ श्रोत्रेंद्रिय.	१० कायबल.

ए दश प्राण जाणवा.

एकेंद्रियने चार प्राण.

बेइंद्रियने ठ प्राण.

तेइंद्रियने सात प्राण.

चौरिंद्रियने आठ प्राण.

असंज्ञी पंचेंद्रियने नव प्राण.

संज्ञी पंचेंद्रियने दश प्राण.

५ ॥ हवे योनिनुं द्वार कहे छे ॥

सात लाख पृथ्वीकाय.

सात लाख अप्काय.

सात लाख तेउकाय.

सात लाख वाउकाय.

दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय.

चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय.

बे लाख बेइंद्रिय.

बे लाख तेइंद्रिय.

बे लाख चौरिंद्रिय.

चार लाख देवता.

चार लाख नारकी.

चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय.

चौद लाख मनुष्यना भेद.

ए सर्व मळी सर्व जीवोनी चोराशी लाख जीवा-योनि थाय.

सिद्धना जीवोने देह नथी, आयु नथी, कर्म नथी, प्राण नथी, योनि नथी.

ए सिद्धना जीवोनी सादि अनंत स्थिति जाणवी.

इति जीवविचार प्रकरणना
छूटा बोलो समाप्त.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 238-240, Mandvi, Sackgalli, Bombay.